bible educational services

शिक्षक केलिए दिशा-निर्देश

बाइबल टाइम लेवल 3 & 4

B सीरीज़

पाठ 7-12

www.besweb.com

शिक्षक केलिए दिशा- निर्देश।

यह दिशा-निर्देश उन शिक्षकों केलिए प्रकाशित किए है जो बाइबल टाइम सिखाते है। इस पुस्तिका को लेवल 3 लगभग 5-10 के आयु के बच्छो को पठाने में इस्तमाल कर सकते है।

हर एक टिचिन्ग गाइड में वही बाइबल पद का अनुकरण किया है जो बाइबल टाइम पाठ में दिए गए है। बाइबल टाइम पाठ और गाइडलाइन्स साप्ताहिक आधार पर उपयोग करने केलिए बनाया गया है। आप्रैल के पाठ क्रिस्मस से सम्बन्धित है।

कई क्षेत्रों में A4 पाठ और दूसरे क्षेत्रों में A5 पुस्तिका को जिसमे 24 पाठ शामिल है असका उपयोग करते है। आम तौर पर शिक्षक A4 मासिक पाठ का वितरण करेंगे ओर एक हफ्तें में एक पाठ को विध्यालय, गिरिजाघर, या अपने घर ले जाकर पूरा करके वापस लौटाना चाहिए। हर महीने के अन्त में शिक्षक पाठ को इकट्ठा करके जाँचने के बाद जल्द ही लौटाना चाहिए।

आदर्शरूप में पुस्तिका इस्तमाल करते वक्त सत्र के अन्त में जाँच करने केलिए इकट्ठा करते है। हम समझ सकते है कि कई परिस्थितियों में यह असम्भव है। ऐसे स्थिति में पुस्तिका को कक्षा के दुसरे बच्चों में वितरण करके उन से जाँच करवाया जा सकता है। पुस्तिका के पीछे हर महीने का अन्क लिखने और बच्चों की प्रगति के बारे में टिप्पणी लिखने का स्थान दिए गए है। एक प्रमाण पत्र भी है जिसे अलग करके छः महीनों में प्राप्त किए कुल अन्क लिखकर बच्चों को देने है।

शिक्षक केलिए तैयारी

हम आदेशात्मक नही होने चाहते जिसकी वजह से शिक्षक को अपने विचारों और तरीको से सिखाने का अवसर न मिले। यह बाइबल टाइम सिखाने केलिए सिर्फ एक सूझाव है।

- **कहानी से सुपरिचित होना** - शिक्षकों को बाइबल कहानियों और उससे जुडे बाइबल टाइम पाठ से अच्छी तरह से सुपरिचित होना चाहिए। शिक्षक को पहले पाठ पूरा करना चाहिए। हर एक पाठ की दिशा-निर्देशों को ध्यान से पढकर नियोजन सहायता के रूप में भी इस्ततमाल करना चाहिए।

- **विषय को समझना** -हर एक पाठ के आरम्भ में अपने यह वाक्य देखा होगा - "हम सीख रहे हे कि" उसके बाद सीखने के दो उदेश्य भी दिए गए है जो हमे उम्मीद है कि शिक्षक के प्रस्तुति और बच्चे बाइलब टाइम को पूरा करने पर उन्हे समझ आऐंगे। सीखने का पहला उदेश्य है विषय के बारे में ज्ञान प्राप्त करना और दूसरा उदेश्य है बच्चे को इस ज्ञान के बारे में सोचने, प्रयोग करके अनुक्रिया देने केलिए प्रोत्साहन देना। यह निर्देशन पाठ में दिए गए मुख्य विषय सत्य का सूक्षम वक्तत्य है। इसे शिक्षक अपने पढाने और सीखने के अपने व्यक्तिगत मूल्यान्कन केलिए उपयोग कर सकते है।

- **परिचय कराना** - हर पाठ के आरम्भ में उन परिस्थितियों में बच्चों के अपने अनुभव के बारे में पूछकर शुरु करना चाहिए। बच्चों को पाठ का परिचय कराने केलिए कई तरीको का सुझाव दिए गए है। जिसके सहायता से कहानी की प्रारम्भ के बारे में बच्चे सम्वातात्मक चर्च कर सकेंगे।

- **पढाना**- कहानी की मुख्य सारांश हमने दिए है। हम यह नही चाहते की पढाते वक्त शिक्षक इसे देखे। हम चाहते है की शिक्षक इस पाठ से इतना परिचित हो ताकि मनेरन्जक और प्रेरणापद तरीके से बच्चों को वह सीखा पाऐंगे। शिक्षक यह चाहेंगे की बच्चे कहानी की मुख्य पाठ को समझे और उस कहानी को सीखने के बाद अनुक्रिया दे। कई प्रधान व्यख्यों को हम तिरछे अक्षरों में लिखे है।

- **सीखना** -हर एक कहानी में एक मुख्य पद दिए गए है। कई जगह दो पद दिए है। हम चाहते है की बच्चों को अक्सर मुख्य पद याद दिलाते रहे ताकि उन्हे बाइबल पदों के बारे में ज्ञान प्राप्त हो।

- **पूरा करे** - एक विध्यालय कि माहोल में बच्चो की सामर्थ्य और शिक्षक की तरह से दिए जाने वाले मदद के बारे में हमे पता होता है। कई बच्चों केलिए ज़रूरी है की शिक्षक उन्हे पाठ पढ के सुन्ाए। अन्य बच्चों स्वयं पढ सकते है। दोनों हाल में यह अच्छा होगा अगर बच्चों का ध्यान हम सवालों से सम्भन्धित निर्देशों के और खीच सके। अगर आप स्कूल से बाहर बाइबल टाइम सीखा रहे हो तो यह बहुत ज़रूरी है कि आप मदद केलिए मौजूद हो ताकि बच्चों को यह न लगे की यह एक बहुत ही मुश्किल काम या परीक्षा है। पढाते वक्त उसे मज़ेदार बनाना प्रोत्साहित करना और तारीफ करना अनिवार्य है।

• **याद करना**- पाठ को दोहराते वक्त पहेली या अभिनय द्वारा उसे मनोरंज़क बनाए ताकि बच्चों को वह हमेशा याद रहे।

1. मुख्य पद को सिखाना

पद को कागज़ या बोर्ड में लिखे और जैसे बच्चे उसे दोहरराते है पद से एक-एक पद करके निकाले ताकि अन्त में पूरा पद को निकाल दिया जाए और बच्चे उन्हे बिना देखे दोहराए।

2. मुख्य पद को परिचय कराने केलिए

A. बच्चों को दो झुण्ड में डालेः एक झुण्ड को कई अक्षर लिखे हुए परचियाँ दे और दुसरे झुण्ड को खाली परचे। बच्चे आपस में मिलकर उसे पूरा करे और सीखे।

B. सबसे पहले जो बच्चा बाइबल में यह पद ढ़ूँढे वह जोर से उसे पढे।

समय योजना

क्रमः हर पाठ केलिए हम एक ही क्रम दिए है। लेकिन शिक्षक चाहे तो इच्छा अनुसार बदल सकते है।

1. प्रस्तुतीकरण और कहानी को सुनाना - लगभग 15 मिनट
2. मुख्य पद को पढाना - 5-10 मिनट
3. कार्य-पत्र को पूरा करना - 20 मिनट
4. सवाल-जवाब और दूसरे क्रियाकलाप - 5-10 मिनट

हमेशा यह कहावत याद रकनाः

"मुझे सुनाईए, मैं भूल सकता हूँ,
'मुझे दिखाईए, मैं याद रखूँगा,
मुझे शामिल करे, मैं सीख लूँगा।"

बाइबल टाइम पाठ्यक्रम

	लेवल 0 (प्री स्कूल) लेवल 1 (उम्र 5-7) लेवल 2 (उम्र 8-10)	लेवल 3 (उम्र 11-13)	लेवल 4 (उम्र 14+)
सीरीज़ A	1. सृष्टी 2. नूह 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. अब्राहम 6. अब्राहम 7. पतरस 8. पतरस 9. याकूब 10. प्रथम ईसाई 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी	1. सृष्टी 2. नूह 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. पतरस 6. अब्राहम 7. याकूब 8. प्रार्थना 9. पौलूस 10. पौलूस 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी	1. सृष्टी और पाप 2. उत्पत्ति 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. पतरस 6. अब्राहम 7. याकूब 8. मसीही जीवन 9. पौलूस 10. पौलूस 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी
सीरीज़ B	1. मसीह का प्रारम्भीक जीवनकाल 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. दृष्टान्त 6. यूसुफ 7. यूसुफ 8. यीशु ने मिले लोग 9. मूसा 10. मूसा 11. मूसा 12. क्रिसमस की कहानी	1. दृष्टान्त 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. प्रथम ईसाई 6. यूसुफ 7. यूसुफ 8. सुसमाचार के लेखक 9. मूसा 10. मूसा 11. मूसा 12. क्रिसमस की कहानी	1. दृष्टान्त 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. प्रथम ईसाई 6. याकूब और परिवार 7. यूसुफ 8 प्रेरितों 2:42 आगे की और 9. मूसा 10. मूसा 11. व्यवस्था 12. क्रिसमस की कहानी
सीरीज़ C	1. दानियेल 2. और अलोकिक कर्म 3. यीशु ने मिले लोग 4. मसीह की मौत 5. रूत और शमुएल 6. दाऊद 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. योना 12. क्रिसमस की कहानी	1. दानियेल 2. यीशु ने मिले लोग 3. और अलोकिक कर्म 4. मसीह की मौत 5. रूत 6. शमूएल 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. परमेश्वर द्वारा उपयुक्त लोग (पुराना नियम) 12. क्रिसमस की कहानी	1. दानियेल 2. यीशु की कहावत 3. प्रभु की शक्ति 4. मसीह की मौत 5. रूत 6. शमूएल 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. पुराने नियम के और किरदार 12. क्रिसमस की कहानी

	B7 – लेवल 3 कहानी 1- युसूफ का जीवनकाल मिस्र के भेदिए।	B7 – लेवल 4 कहानी 1- यूसुफ का जीवनकाल किशोरावस्था में परीक्षा।
	बाइबल अनुभाग: उत्पत्ति 41: 46-57; 42: 1-26 ***मुख्य पद : गिनती 32: 23*** **हम सीख रहे की :** 1. हम पाप करके बच नहीं सकते। 2. सबसे पहले हमें हमारे पाप को स्वीकार करना चाहिए ताकि केवल प्रभु यीशु द्वारा दिए गए क्षमा की सराहना हम कर सके।	***बाइबल अनुभाग: उत्पत्ति 39: 1-23 ; 40: 1-23*** ***मुख्य पद : उत्पत्ति 39: 21*** **हम सीख रहे की :** 1. युसूफ प्रलोभन में नहीं गिरा। 2. युसूफ की गुलामी, प्रलोभन और कारावास में प्रभु उसका साथ था। युसूफ ने प्रभु पर भरोसा किया और उनका आदेश का पालन किया।
पहचान कराने	बच्चों को समझाओ कि और सात साल का अकाल लोगों के लिए एक बहुत गंभीर स्थिति थी लेकिन मिस्रियों ने भोजन के लिए अपनी फसल पर निर्भर किया। उन दिनों अनाज का मूल्यवान था और लंबे समय के लिए संग्रहीत किया जा सकता था। इसे पैसे के रूप में भी इस्तेमाल किया गया था। समझाएं कि नील नदी के कारण अकाल के समय में मिस्र आमतौर पर पड़ोसी देशों की तुलना में बेहतर था।	पोतीपर फिरौन का हाकिम और अंगरक्षकों का प्रधान था और जोसेफ़ को अपने घर में काम करने के लिए कुछ मिस्री गुलाम व्यापारियों से खरीदा गया था। यह पोतीपर के जीवन का सबसे अच्छा फैसला था क्योंकि युसूफ बहुत प्रतिभाशाली युवा था। पोतीपर की पत्नी ने युसूफ पर झूठा आरोप लगाया और उसे बंदीगृह में डाल दिया गया। जब बन्दिगृह में सपनों का विषय के बारें में चर्चा हुआ युसूफ ने हर किसी का ध्यान परमेश्वर पर आकर्षित किया: 'क्या स्वप्नों का फल कहना परमेश्वर का काम नहीं है?' **(उत्पत्ति 40: 8)** और इस अवसर को खुद को ऊँचा और बुद्धिमान दिखाने के बजाय परमेश्वर के लिए एक गवाही देने के लिए उपयोग किया।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. अकाल सात साल के लिए रहा **(पद 54)** और केवल युसूफ ही था जो लोगों को फिरौन कि भंडार घरों में से अनाज दे सकता था। **(पद 55)** 2. युसूफ के भाइयों को अकाल के कारण अनाज की तलाश में मिस्र आना पड़ा। **(42: 1-3)** 3. युसूफ ने अपने भाइयों को पहचान लिया लेकिन उन्होंने युसूफ को नहीं पहचाना। **(42: 7)** युसूफ ने उन्हें तीन दिन तक उन्हें बन्दीगृह में डाला। 4. युसूफ ने अपने भाइयों के साथ इस तरह व्यवहार किया कि वे स्वीकार करें सके कि उन्होंने युसूफ के खिलाफ कितना बड़ा पाप किया था। **(42:21)** तभी वें उन्हें माफ़ कर पाएंगे। 5. उनकी यादें और अन्तरात्मा ने उन्हें अपने अपराध के बारे में याद दिलाया और वे समझ गए की अपने गलतियों की कारण वे अब संकट में थे। 6. उनके पाप के बावजूद युसूफ उनके लिए रोए **(पद 24)** और उन्हें अपने वापसी यात्रा और पिता याकूब के लिए भी अनाज दिया। लेकिन वह शिमोन को बन्दीगृह में रखता है और मांग करता है कि सबसे छोटा बेटा बिन्यामीन को मिस्र में लाया जाना चाहिए। 7. जब याकूब को सब कुछ बताया गया तो वह बहुत परेशान हो गया और कहा कि वह कभी भी बिन्यामीन को मिस्र में नहीं जाने देंगे। **(42:38)** **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. युसूफ ने मिस्र में एक गुलाम के रूप में अपनी स्थिति को सकरात्मक तरीके से उपयोग किया और जल्द ही फिरौन का विश्वास अर्जित किया **(39: 2)** 2. फिरौन की पत्नी ने युसूफ पर दुरागतचर्य करने के आरोप लगाए और उसे बंदीगृह में डाला गया था। **(39: 11-20)** लेकिन युसूफ ईमादार और जवान था और वह हर परिस्थिति में परमेश्वर पर भरोसा करता था। इसलिए परमेश्वर ने इस स्थिति को पलट कर युसूफ को बन्दियों का अधिकारी बना दिया। **(39:21-23)** 3. बंदीगृह में दो कैदियों ने स्वप्न देखा और युसूफ से उसका व्याख्या किया। **(40:8)** 4. युसूफ ने पिलानेहारों के प्रधान कि सपने को व्याख्या करके कहा की उसमे जीवन का संदेश था और उन्हें बन्दीगृह से मुक्त किया जाएगा। लेकिन पकानेहारों के सपने में मौत का एक संदेश था और उन्हें मार डाला जाएगा। 5. युसूफ ने पिलानेहारों के प्रधान को बन्दीगृह से मुक्त होकर भला होने पर उसे याद करके फिरौन से उसे भी छुड़वाने के बारें में चर्चा करने को कहा। लेकिन प्रधान ने युसूफ को भूल गया। **(40: 14 -23)** **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	बच्चों के साथ चर्चा करें कि मुख्य पद इस पाठ के सारांश को कैसे दर्शाती है।	बच्चों के साथ चर्चा करें कि मुख्य पद में इस विषय के बारे में सबक का सारांश कैसे प्रस्तुत करती है: 1. पोतीफर के घर में युसूफ का जीवन; और 2. बन्दीगृह में युसूफ का जीवन।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. पाप को छोड़कर प्रभु यीशु से माफी मांगने का महत्व। **2. 1 यूहन्ना 1:9** 'यदि हम अपने पापों को मान ले, नो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है' को समझने का महत्व। 3. पाठ में बताया गया उद्धार की मूल बातें पर ध्यान दें।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हमें प्रलोभन में पड़ना नहीं चाहिए। लेकिन हर दिन इस पर जीत पाने के लिए परमेश्वर से मदद मांगनी चाहिए। 2. प्रभु के लिए एक प्रभावी साक्षी होने का रहस्य अवसरों को पहचानना है, जहां हम प्रभु यीशु को दूसरे व्यक्तियों के अनुभव से जोड़ कर उन्हें उद्धारकर्ता के लिए जीतने के प्रयास कर सकते हे। **3. इफिसियों 6: 13-17, याकूब 1: 12-18** पढ़ें और विचार करें कि हम अपने जीवन में प्रलोभन पर कैसे जीत पा सकते हैं।

	B7 – लेवल 3 कहानी 2- युसूफ का जीवनकाल बिन्यामीन और बुरी खबर।	B7 – लेवल 4 कहानी 2- यूसुफ का जीवनकाल महल में उनके पदोन्नति।
	बाइबल अनुभाग: उत्पत्ति 42:42:5-38; 43: 11-14, 24-31; 44: 1-17 ***मुख्य पद :इफ़िसियों 4: 32*** **हम सीख रहे की :** 1. यहूदा जिन्होंने अपने भाइयों के साथ मिलकर युसूफ को गुलामी में बेचने में शामिल हुए, अब बिन्यामीन को बचाने के लिए दास बनने के लिए भी तैयार होता है। **(44:33)** 2. परमेश्वर कठोर लोगों के दिल में काम करके उनके जीवन में एक संपूर्ण परिवर्तन ला सकता है।	***बाइबल अनुभाग: उत्पत्ति 41: 1-45*** ***मुख्य पद : उत्पत्ति 41: 38*** **हम सीख रहे की :** 1. जैसे फिरौन जानता था की युसूफ में परमेश्वर का आत्मा रहता है, वैसे जो लोग हमें देकते है उन्हें हमारे समवेदनापूर्ण कर्मों और धार्मिक जीवन द्वारा परमेश्वर को देखना चाहिए। **(41:38)** 2. जल्दी ही युसूफ श्रेष्ठतम स्थान में पहुँच गया - एक दास से स्थान से वह मिस्र का अधिकारी बन गया। जो भी परिस्थितियां में हम खुद को पाते हैं, उन्हें हम हमारे जीवन में दिए गए परमेश्वर के प्रशिक्षण के रूप में समझना चाहिए।
पहचान कराने	छात्रों के साथ चर्चा करे कि कैसे यूसुफ के भाइयों के पाप ने न केवल खुद पर संकट लाया बल्कि अपने पिता के दिल को भी तोड़ दिया। समझाएं कि पाप हमारे परिवार और दोस्तों पर ही नहीं लेकिन अपने आप पर भी गंभीर प्रभाव डाल सकता है।	युसूफ को बन्दीगृह से फिरौन के सामने पेश करने के लिए बुलाया गया था। युसूफ की परमेश्वर ने फिरौन के सपनों की व्याख्या करने की क्षमता दिया था। इससे प्रभावित होकर फिरौन ने युसूफ को मिस्र का उच्चाधिकारी बनाया। **(उत्पत्ति 41:41)** युसूफ मुश्किल परिस्थितियों में भी परमेश्वर के प्रति वफादार था और इसलिए परमेश्वर भी उसके प्रति सच्चा रहा। (अध्याय 1)
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. अकाल चलता रहा और भाईयों ने फिर से भोजन के लिए मिस्र लौटे। याकूब बिन्यामीन को मिस्र भेजने के लिए बहुत अनिच्छुक है। **(43:11)** केवल युसूफ ही उनकी ज़रूरत को पूरा कर सकता है और उन्हें अपने संकट से बहार ला सकता है। 2. भाइयों को भोजन के लिए युसूफ के घर में आमंत्रित किया जाता है, फिर भी वे उन्हें पहचान नहीं पाते। **(43:16)** 3. भयभीत भाई युसूफ द्वारा अपने महल में प्रदान किए गए दावत का आनंद लेते हैं। अपने छोटे भाई बिन्यामीन को देखकर युसूफ रो पड़ता है। **(43:30)** 4. उसने अपने चांदी का कटोरा को बिन्यामीन की बोरी में डालने का आदेश दिया और बाद में बिन्यामीन पर छोरी का आरोप लगाया और कहा की उसे दंडित किया जाना चाहिए। **(44:17)** 5. इस समय के दौरान युसूफ परीक्षण और आकलन कर रहा था कि क्या उसके भाई क्षमा मिलने के लिए तैयार थे या नहीं। **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. ज्योतिषयों और पण्डितों फिरौन के सपनों की व्याख्या करने में असमर्थ थे। लेकिन परमेश्वर ने इस सपने का व्याख्या युसूफ को दिया। **(41:8)** 2. युसूफ परमेश्वर के बारे में अपने ज्ञान की मदद से फिरौन के सपने की व्याख्या करने में सक्षम हुआ। और वह फिर परमेश्वर को श्रेय देता है। **(41:16)** 3. युसूफ ने सात साल के अकाल में जीवित रहने के लिए फिरौन को एक योजना दिया, जिसने मिस्र में कई लोगों को और कई मील दूर अपने परिवार की भी बचाने में मदद किया। **(41: 33-36)** 4. युसूफ को उन्नति मिला और उसे मिस्र का अधिकारी बनाया गया। उन्हें एक नया नाम दिया गया और मिस्र के याजक की बेटी से उसका विवाह करा दिया गया। यह दिखाते है कि उन्हें कितना सम्मानित किया गया था। **(41: 41-45)**. **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	बच्चों के साथ चर्चा करें कि मुख्य पद इस पाठ के सारांश को कैसे दर्शाती है।	बच्चों से i) सपना ii) इसकी व्याख्या iii) और युसूफ का पदोन्नति के बारे में सवाल पूछें, जो उन्हें अध्याय 2 कि सवालों के जवाब देने में मदद करेंगे।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. समझाएं कि पाप संकट का कारण बनता है। 2. जब हम पश्चाताप करके हमारे पापों को स्वीकार करते हैं तो प्रभु यीशु हमें माफ करने के लिए तैयार है। 3. जब प्रभु यीशु हमें माफ़ कर देता है तो हमें उन लोगों को क्षमा करना चाहिए जो हमारे खिलाफ पाप करते हैं। **(इफ़िसियों 4:32)**	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. जैसे युसूफ परमेश्वर के साथ अपने सही रिश्ते के कारण लगभग किसी भी कार्य करने के लिए तैयार था, उनके उदाहरण से हमें सीखना चाहिए की अगर हम मसीही हैं, तो प्रार्थना और बाइबल अध्ययन हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा और हमारे जीवन की दिशा खोजने के लिए महत्वपूर्ण हैं। 2. युसूफ हमेशा भगवान को श्रेय देता था और हमें भी ऐसा करना चाहिए। अपने लिए सम्मान लेना परमेश्वर के सम्मान को चुराना है। 3. **भजन संहिता 105: 16-22** और **प्रेरितों 7: 9,10** को पढ़ो और पता लगाएं कि युसूफ कि मृत्यु के कई सालों बाद उनके बारे में क्या कहता है। और इन पदों को अपने जीवन में लागू करें।

	B7 – लेवल 3 कहानी 3- युसूफ का जीवनकाल क्षमा और अच्छी खबर।	B7 – लेवल 4 कहानी 3- यूसुफ का जीवनकाल देखभाल करने की प्रकृति।
	बाइबल अनुभाग: उत्पत्ति 44: 18-34, 45: 1-14, 25-28 *मुख्य पद : उत्पत्ति 45:9* **हम सीख रहे की :** 1. हालांकि युसूफ के भाई उससे छुटकारा पाने के लिए चाहते थे परमेश्वर ने उनके जीवन सुरक्षित करने, मिस्र को बचाने और इस्राएल राष्ट्र बनाने की शुरुआत के लिए रास्ता तैयार करने के लिए उनके ही बुरे कर्मों का उपयोग किया। 2. जैसे युसूफ को अस्वीकार किया गया था और बाद में उसने अपने भाइयों को माफ़ किया, वैसे ही परमेश्वर को इन्कार करना पर भी वे हमें क्षमा करके आशीर्वाद देता है।	*बाइबल अनुभाग: उत्पत्ति 42 और 43* *मुख्य पद : रोमियों 14: 11, 12* **हम सीख रहे की :** 1. युसूफ के भाइयों को क्षमा करने से पहले उन्हें उनके पाप को स्वीकार करने के लिए लाया जाना चाहिए था। 2. जैसे युसूफ के भाइयों ने उसे दण्डवत किया ऐसे ही एक दिन हम सब प्रभु यीशु मसीह के सामने दण्डवत करके उसे प्रभु के रूप में स्वीकार करेंगे।
पहचान कराने	जब युसूफ ने देखा कि उसके भाई वास्तव में माफी चाहते थे, उसने खुलासा किया कि वह उनके लिए कौन था और कहा, 'में युसूफ हूँ' **(उत्पत्ति 45:4)** बच्चों के साथ चर्चा करें कि स्वर्गीय युसूफ हमारे प्रभु यीशु मसीह कैसे खुद को 'में हूँ' कहकर निम्नलिखित वाक्यों में संदर्भित किया है: **यूहन्ना 6:35** - जीवन की रोटी; **यूहन्ना 8:12** - जगत की ज्योति ; **यूहन्ना 10:7** - द्वार; **यूहन्ना 10:11** - अच्छा चरवाहा; **यूहन्ना 11:25** - पुनरुत्थान और जीवन; **यूहन्ना 14:6** - मार्ग ; **यूहन्ना 15:1** - दाखलता।	????????????? ??????????????
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. चांदी का कटोरा युसूफ के अधिकार का प्रतीक था और उसका चोरी करना एक गंभीर अपराध होगा। अब भाइयों को चिंता थी कि बिन्यामीन को नुकसान पहुंचाया जा सकता है इसलिए महल में लौटते वक्त यहूदा ने बिन्यामीन की सजा लेने के लिए राजी हो गया। (44:33) 2. दंड का सामना करने के बजाय भाइयों को क्षमा मिली **(45:5)** और युसूफ उन्हें बताता है कि उन लोगों की बुरे कर्मों के बावजूद परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा कर रहे थे। 3. भाई एक अच्छी खबर के साथ याकूब के पास लौट आए कि युसूफ जीवित है और वे युसूफ द्वारा भेजे गए उपहार उसे दिखाते है। **(45: 26, 27)** **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. युसूफ के भाईयों अनाज खरीदने के लिए मिस्र आते हैं और युसूफ उनसे कठोरता से बात करते है, यह संकेत है की युसूफ चाहता था की अपने भाईयों को क्षमा करने के पहले वे पहले अपने पाप को स्वीकारे। **(42:6 ,7)** 2. युसूफ उन्हें तीन दिनों तक बन्दीगृह में डाल दिया। अपने अन्तरात्मा में उन्हें पता था कि उन्होंने युसूफ के खिलाफ पाप किया था और इसलिए उन्होंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। **(42:21)** 3. हालांकि युसूफ अपने भाइयों को अनुशासित करता है लेकिन वह प्यार में ऐसा करता है क्योंकि **उत्पत्ति 42:24** में बताया गया है कि उसने रोया था। यहां हम सच्ची कृपा देखते हैं क्योंकि युसूफ अपने भाइयों से वो प्यार दिखता है जिसका वह लायक नहीं है। 4. बिन्यामीन के साथ युसूफ को मिलने के लिए उनकी दूसरी यात्रा पर भाईयों ने युसूफ के अधिकार को स्वीकारते हुए उसे दण्डवत किया। **(43: 26-28) उत्पत्ति 37: 7** में हम युसूफ के सपने को वास्तविकता में बदलते हुए देखते हैं 5. आखिर में जब युसूफ अपने भाई बिन्यामीन को देखता है तो उसका मन भर आता है और अपने कोठरी में जाकर रोता है। **(43:30)**. **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	मुख्य पद को इस पाठ को जोड़िए: 'परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया हैं और 'मेरे पास बिना विलम्ब किए चला आ' बच्चों के साथ इन दो वाक्यांशों को सुनने पर याकूब की खुशी की प्रतिक्रिया के बारे में चर्चा करें।	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या करके बच्चों को समझाएं के यह इस पाठ को कैसे संशोधित करता है।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. यह समझने का महत्व की प्रभु यीशु स्वर्ग में जीवित है और सभी का प्रभु है, जैसे युसूफ मिस्र में जीवित था और सब के अधिकारी थे। 2. यह समझने का आवश्यकता की परमेश्वर पर भरोसा करने पर वे हमें क्षमा करके हमें बहुतायत आशीर्वाद देंगे। 3. फिर से बच्चों को याद दिलाना की हमें परमेश्वर के उदाहरण का पालन करके दूसरों को क्षमा करने की आवश्यकता है, जैसा प्रभु यीशु ने शिष्यों को अपनी प्रार्थना के द्वारा सिखाया था। **(मत्ती 6: 12)**	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** **1. रोमियों 5: 21** में प्रभु यीशु के कृपा के बारे में हम क्या सीखते हैं। 2. जैसे युसूफ ने अपने भाइयों से प्यार दिखाया जिन्होंने उससे बरा व्यवहार किया था, हम कलवारी में प्रभु यीशु द्वारा प्रदर्शित किए गए महान प्यार देखते हैं जो उसने हम जैसे पापियों के लिए अपने प्राण देखर प्रकट किया था। **लूका 23: 34** को पढ़कर विचार करें। **3. उत्पत्ति 37: 7. 8** में जोसेफ का सपना **उत्पत्ति 43: 26** में वास्तविकता बनता है। **भजन संहिता 51 और फिलिप्पियों 2: 9-11** को पढ़ें और इस बारे में सोचें कि कैसे ये हमारे पाप को कबूलने और यीशु मसीह को प्रभु मानने की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

	B7 – लेवल 3 कहानी 4- युसूफ का जीवनकाल मिस्र में एक साथ।	B7 – लेवल 4 कहानी 4- यूसुफ का जीवनकाल उसका सम्पूर्ण क्षमा।
	बाइबल अनुभाग: उत्पत्ति *मुख्य पद : उत्पत्ति* **हम सीख रहे की :** 1. युसूफ की ईमानदारी ने अपने पूरे परिवार को प्रभावित किया और उन्हें कई आशीर्वाद भी मिले। 2. युसूफ परमेस्वर के वादे का एक वास्तविक उदाहरण है जिसे हम पढ़ते है **1 शमूएल 2: 30** : 'जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करूंगा' में ।	*बाइबल अनुभाग: उत्पत्ति 44 और 45* *मुख्य पद : रोमियों 5: 10* **हम सीख रहे की :** 1. जब युसूफ के भाइयों ने अपने पाप को कबूल किया तब यसूफ के साथ उनकी दोस्ती में सुधार आया। और जब हम अपने पाप को स्वीकार करके पश्चाताप करते हैं तो हम प्रभु यीशु के साथ एक वास्तविक और सार्थक दोस्ती में प्रवेश कर सकते हैं। 2. जैसे ही युसूफ मिस्र में अपने भाईयों के लिए सबकुछ प्रदान करता हैं वैसे हीं प्रभु यीशु उनके अपने लोगों के लिए सबकुछ भरपूर प्रधान करेंगे और उन्हें स्वर्ग ले जाएंगे जहाँ अनन्त खुशी होगी।
पहचान कराने	बच्चों को समझाएं कि कैसे परमेश्वर युसूफ के जीवन में एक योजना तैयार कर रहा था। उसका पूरा परिवार मिस्र में गोशेन में उसके साथ रहने के लिए कनान से आया था। अब्रहम और उसके वंशजों के लिए कनान वादा किया गया था, लेकिन इस बीच परमेश्वर युसूफ के परिवार को काननियो के बुरे प्रभाव से दूर ले जा रहा था जिन्होंने परमेश्वर की ओर अपनी पीठ फेर दिया था। लेकिन बाद में जैसे परमेश्वर ने वादा किया इस्राएलियों कनान लौटे।	पिछले अध्याय में हमने सीखा कि कैसे युसूफ अपने भाइयों को उनके पापों को स्वीकार करने में कुशलता से काम करता है । इस तरह उन्हें क्षमा करने के लिए युसूफ के लिए रास्ता खुला ताकि अपने भाइयों से टूटी रिश्ते को वास्तव में सुलझाया जा सके।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. परमेश्वर याकूब को अपने घर छोड़कर अज्ञात और दूरदराज के भूमि की यात्रा करने के लिए कहता है और उसे आश्वासन देता है कि वह उसका ख्याल रखेंगे। **(46: 2, 3)** 2. सारी संपत्ति के साथ उनका पूरे परिवार मिस्र के लिए निकला। **(46: 5-7)** 3. याकूब का परिवार गोशेन पहुंचता है और युसूफ के साथ एक अश्रुपूरित पुनर्मिलन होता है। **(46:29)** 4. याकूब की मौत के बाद भाइयों को डर था की जोसेफ उनसे बदला लेंगें, लेकिन आश्चर्य से उन्होंने न केवल उन्हें क्षमा किया बल्कि उन्हें और उनके परिवारों की देखभाल करने की पेशकश भी किया। **(50: 15-21)** **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. कनान में अपने पिता याकूब के पास लौटने से पहले यहूदा मिस्र में रहकर बिन्यामीन के जगह गुलाम बनने के लिए तैयार होता है। यह उन दिनों से इतना विभिन्न है जब उन्होंने युसूफ को गुलामी के लिए बेच दिया था जिसके कारण याकूब का दिल कई सालों के लिए टूटा रहा। परमेश्वर की कृपा अब उसके दिल में क्रिया कर रहा था। **(44:33)** 2. युसूफ खुद अपने भाइयों के सामने प्रकट करता है और उन्हें बताता है कि परमेश्वर ने सब भलाई के लिए किया है। **(45:4,5)**। 3. युसूफ रोता है, बिन्यामीन को गले लगाता है और अपने भाइयों को चुंबन देता है। **(45:14)** 4. फिरौन ने युसूफ के भाइयों को अपने पिता और परिवारों को मिस्र ले आने को कहा और वादा किया की वह उन्हें सारे चीज़ों का प्रधान करेंगे। **(45:17-19)** 5. भाइयों ने याकूब को बताया कि युसूफ जिंदा है और जब उसने उन गाड़ियों को देखा जो उन सब को मिस्र में जाने के लिए भेजा था याकूब जान गया कि युसूफ जिंदा था और वह उससे फिर मिल सकेंगे। **(45:25-28)**। **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	ध्यान से बच्चों से सवाल करें ताकि पूछे गए प्रश्न उन्हें इस पाठ में सवालों के जवाब भरने में सहायता करेंगे।	बच्चों के ध्यान आकर्षित करें कि कैसे इस कहानी में युसूफ के सुसमाचार प्रभु यीशु के सुसमाचार से मिलता है: 1. जैसे ही युसूफ जीवित था, यीशु भी आज जीवित है। 2. जैसे ही युसूफ मिस्र में शासक था, प्रभु यीशु राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। 3. जैसे ही युसूफ अपने परिवार के लिए सारे चीज़े प्रदान किया था, प्रभ यीशु ने उन सारी चीज़ो को प्रदान किया जो हमारे उद्धार कै लिए हमें जरूरी है। 4. जैसे ही युसूफ ने अपने परिवार को मिस्र में लाया, प्रभ यीशु चाहता हैं कि हम मोक्ष के लिए उनके पास आएं ताँकि वें हमेशा के लिए हमें स्वर्ग में ले जा सके।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. जैसे युसूफ अपने भविष्य के बारे में अनजान थे हम भी हमेशा यह नहीं जानते कि हमारा भविष्य क्या होगा। लेकिन मसीही के रूप में हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारी सच्चाई का सम्मान करेंगे। 2. परमेश्वर आज इस दुनिया के बुरे इरादों और सरकारों को खत्म करके अपने इच्छित परिणामों को पूरा कर सकते हैं।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हमारे पाप को दूर करने और स्वर्ग के लिए लायक बनाने के लिए कलवारी के क्रूस पर प्रभ यीशु ने किए प्रावधान के प्रकाश में, अगर हम उससे संबंधित हैं तो हमें उस तरीके से जीने की ज़रूरत है जो उसे प्रसन्न करे। 2. परमेश्वर युसूफ के साथ था और इसके बारें में कई वर्षों बाद नए नियम में स्तिफनुस शहीद होने से पहले कहा था। **(प्रेरितों 7: 12-15)**

	B8 – लेवल 3 कहानी 1- सुसमाचार के लेखक मत्ती।	B8 – लेवल 4 कहानी 1- आगे का रास्ता मसीही की सभागिता।
	बाइबल अनुभाग: मत्ती 9: 9-13 और 27: 37-42 ***मुख्य पद : मत्ती 16:16*** **हम सीख रहे की :** 1. जब यीशु ने मत्ती को बुलाया जो एक एक यहूदी और एक चुंगी लेनेवाला था, उसने तुरंत जवाब दिया और यीशु का पीछा किया। 2. अधिकांश यहूदियों ने यीशु को अस्वीकृत किया और परिणामस्वरूप उन्हें क्रूस पर चढ़ाया।	***बाइबल अनुभाग: प्रेरितों 2: 41-44, 4: 32-35*** ***मुख्य पद : प्रेरितों 2: 42*** **हम सीख रहे की :** 1. जब लोग मसीही बने वे अपने विश्वास में बढ़ने के लिए एक साथ समय बिताने की महत्व की महसूस किया। 2. उन्होंने किसी भी तरह से एक दूसरे की मदद करने का फैसला किया और एक दूसरे के साथ साझा किया।
पहचान कराने	बच्चों को समझाओ कि मत्ती एक चुंगी लेनेवाला था। इन लोगों को उनकी कुटिलता और लोगों से एकत्रित उच्च चुंगी के कारण यहूदीओं नफरत करते थे, और इस लिए भी क्योंकि यह रोमन साम्राज्य के हितों की सेवा करते थे जो उस समय यहूदियों के अधिकारियों थे।	बच्चों को समझाएं कि पतरस यीशु के शिष्यों में से एक था और यीशु को क्रूस पर चढ़ाते वक्त उसे इंकार कर दिया था। फिर भी यीशु ने उसे क्षमा किया और अब वह निडरतापूर्वक लोगों को यीशु के बारे में बता रहा था। उसकी गलतियों इतनी बुरी नहीं थी कि उसे क्षमा नहीं किया जा सके और अब प्रबलता से उसे परमेश्वर के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. मत्ती ने तुरंत उद्धारकर्ता के बुलावा का जवाब दिया। 2. मत्ती ने एक बेईमानी नौकरी को छोड़ कर तुरन्त प्रभु यीशु के शिष्य बन गया। वह बारह शिष्यों में से एक था। **(9:9)** 3. उन्हें मत्ती के सुसमाचार लिखने के लिए सम्मानित किया गया और उसने दिखाया कि यीशु किस तरह से अपेक्षित राजा है, जिसे यहूदी मसीहा बुलाता था। 4. प्रभु यीशु के आगमन के बारें में मत्ती ने लिखे वृत्तान्त का संक्षेप में वर्णन करें। और इस बात पर जोर दें कि प्रभु यीशु के इस धरती पर आने से पुराने नियमों की कई भविष्यवाणियों की पूर्तिकरण के बारें में मत्ती कैसे व्याख्या करते हैं। **(मत्ती 1 - 2)** 5. मत्ती यीशु की वंशावली, उनका सार्वजनिक सेवकाई, उनके मकदमे, मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान - हमारे उद्धार की नींव, का अभिलेख करता है। इस लिए उनकी पुस्तक को सुसमाचार कहा जाता है। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. शिष्य पतरस सुसमाचार का प्रचार किया। उन्होंने लोगों को समझाया की उन्हें अपने पापों से पश्चाताप करके जीवित मसीह में भरोसा करने की ज़रूरत है। कई मसीही बन गए और उद्धार के लिए यीश मसीह पर भरोसा किया। 120 से साथ 3000 और कलीसिया से जुड़ गए। बच्चों के साथ विचार करें कि इतने जल्दी लोग इतने सारे लोग मसीही बनना कितना आश्चर्यजनक हुए होंगे। **(2: 38-41)** 2. इन नए मसीही ने एक सामाजिक तौर पर काम करना शुरू किया - कलीसिया बन रहा था। वे अन्य मसीही के साथ एकजुट होकर प्रेरितों की उपदेश सुनने, यीशु की मौत के स्मरण करने, प्रार्थना करने और सहभागिता के लिए मिलते रहे। बच्चों को समझाएं कि उन्हें उन लोगों के साथ रहने की ज़रूरत है जो उन्हें परमेश्वर के वचन, प्रार्थना, और उनके विश्वास में परिपक्व होने में मदद करेंगे। 3. मसीही सभी एक साथ मिले और एक दूसरे के साथ सम्पत्ति साझा किया। वे एक परिवार की तरह ज़रूरत वाले लोगों के साथ अपने सम्पत्ति साझा करते थे। 4. उन्होंने मसीह में भाई और बहन बनने और एक दूसरे के साथ साझा करके मसीह में एक-दूसरे से प्यार करने के महत्व को महसूस किया। **(प्रेरितों 2: 42-47)** **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	बच्चों से प्रश्न पूछकर सबक की समीक्षा करें जो उन्हें पाठ 1 में पूछे गए सवालों के जवाब देने में मदद करेंगें।	बच्चों से आज सामाजिक रूप में मसीही अपने विश्वास में बढ़ने और परिपक्व हो जाने की व्यावहारिक तरीकों की एक सूची बनाने के लिए कहे।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. प्रभु यीशु की बुलावे के लिए तुरंत जवाब देने और हमारा जीवन प्रभु यीशु को अपना जीवन समर्पित करने पर विचार करने के लिए। 2. यीशु की सराहना करने के लिए की वे न केवल यहूदी के लिए राजा था लेकिन राजाओं और राजा और प्रभुओं का प्रभु भी है और वह हमारे विश्वास और सेवा के योग्य है। 3. यह समझने के लिए कि प्रभु यीशु को खुद को बचाने की ज़रूरत नहीं थी और यह आवश्यक था कि वह हमारे जैसे पापियों को बचाने के लिए क्रूस पर रहे।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. अगर हम मसीही हैं, तो क्या हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि हम अन्य मसीही के साथ समय बिता कर एक दूसरे से साथ सीख रहे है? हम तब तक नहीं बढ़ेंगे जब तक हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन न करके प्रार्थना न करें। 2. हमें हर संभव तरीके से एक-दूसरे की मदद करने की हमारी ज़िम्मेदारी के बारे में भी सोचना चाहिए। मसीह में भाई और बहन के रूप में जब उसके सदस्य एक साथ काम करते हैं तो प्रभु का परिवार सबसे अच्छा काम करता है। 3. क्या आपको लगता है कि आपने इतनी सारी गलतियां की हैं की आप यीशु की सेवा नहीं कर सकते? पतरस ने यीशु को इंकार किया था, फिर भी सुसमाचार के प्रचार करके हजारों लोगों तक पहुंचने के लिए उसका उपयोग किया जा रहा था। परमेश्वर आपके जीवन के साथ भी ऐसा कर सकते हैं।

	B8 – लेवल 3 कहानी 2- सुसमाचार के लेखक मरकुस।	B8 – लेवल 4 कहानी 2- आगे का रास्ता मसीही बप्तिस्मा।
	बाइबल अनुभाग: प्रेरितों 12: 5-12; मरकुस 1: 29-42 *मुख्य पद : मरकुस 10:45* **हम सीख रहे की :** 1. मरकस अपने सुसमाचार में यीशु को एक आदर्श नौकर के रूप पर ध्यान केंद्रित करता है। और मरकस यीशु ने जो कहा उससे ज़्यादा उसके कर्मों के बारें में लिखता है। 2. मरकस दिखाते हैं कि कैसे प्रभु यीशु दूसरों को उनकी सेवा करनें के लिए चुनता है।	*बाइबल अनुभाग: मत्ती 28: 16-20, प्रेरितों 8: 34-39, 18: 8* *मुख्य पद : प्रेरितों 2: 41* **हम सीख रहे की :** 1. बपतिस्मा मसीह के लिए हमारे आज्ञाकारिता का एक प्रदर्शन है। 2. बाइबल के बहुत से लोग मसीही बन गए और उनके विश्वास को प्रदर्शन करते हुए बपतिस्मा लिया। 3. बपतिस्मा हमारे मसीह के शिष्य होने का प्रदर्शन है।
पहचान कराने	मरकस के सुसमाचार में प्रभ यीश की कहानी है जो स्वर्ग से पृथ्वी पर सेवा पानें के लिए नहीं सेवा करने के लिए आया था और जिन्होंने हमारी छुड़ौती के लिए अपना प्राण कलवारी क्रूस पर दिया। जब वह धरती पर था, प्रभ यीश पूरी तरह से ईश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी था, उसके शक्तिशालीं काम परमेश्वर की पवित्र आत्मा की शक्ति में किए गए थे। यह भी दिलचस्प है कि लेखक मरकस के जीवन में भी एक अच्छी शरुआत हुआ था लेकिन थोड़ी देर के लिए सेवा से गायब हो गया लेकिन अंत में परमेश्वर के लिए सेवा के लिए बहाल किया गया। **(2 तीमुथियुस 4:11)**	बच्चों से पूछें कि क्या वे कभी बपतिस्मा लेने या बपतिस्मा देखने के लिए गए हैं? उन्हें अपने अनुभव साझा करने के लिए कहें? यह किस तरह का था? क्या हुआ? उन्होंने यह किसका प्रतीक समझा?
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. मरकस वह परिवार से था जिसका घर यरूशलेम के मसीही इस्तेमाल करते थे। मसीही हेरोदेस के हाथों से पतरस की सरक्षित रिहाई के लिए वहां प्रार्थना कर रहे थे, क्योंकि हेरोदेस पहले ही याकूब को मार चूका था। **(प्रेरितों 12: 5-12)** 2. मरकस सुसमाचार के प्रसार में परमेश्वर की सेवा करना चाहता था। हालाँकि वह अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर पौलस और उनकी साथियों के साथ निकला था, उसने उन्हें छोड़कर यरूशलेम लौट आया। **(प्रेरितों 12: 25, - 13:13)** 3. पौलस ने मरकस की वापसी को सेवा में अच्छा नहीं समझा और दूसरी मिशनरी यात्रा पर उनके साथ चलने की अनमति नहीं दिया। **(प्रेरितों 15: 37-39)** आखिरकार मरकस ने पौलस के आत्मविश्वास को वापस पाया और उसे साथ ले लिया गया। और वह प्रभु यीशु की सेवा में निरंतर लगा रहा। 4. हालांकि उनकी सेवा में मरकस विफल रहा, उन्होंने प्रभ यीश ने जो पृथ्वी पर किया खासकर उनके अलौकिक कर्मों के बारें में विस्तार से लिखा। शिमौन की सास को चंगा करना, कोढी को स्वस्थ करना और शिष्यों जब गलील के समुद्र पर नाव में थे तब तूफ़ान को शान्त करने के बारें में भी उन्होंने लेख में शामिल किया। **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. यीश ने पृथ्वी छोड़ने से पहले, उन्होंने शिष्य को एक महान आयोग दिया। तब उन्होंने उन्हें पूरी दनिया में जाकर दनिया भर में शिष्यों को बनाने के लिए कहाँ। और उन्हें पिता, पत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा देने का अधिकार दिया। यीश ने उनके साथ रहने का वादा भी किया। **(मत्ती 28: 18-20)** 2. यीश ने शिष्यों को लोगों को बपतिस्मा देने के लिए कहा था। बपतिस्मा विश्वासियों को यीश मसीह की मृत्य और पनरुत्थान के साथ जोड़ता है। बपतिस्मा दिखाते है की एक व्यक्ति अपने पापों में मर कर एक नए जीवन के लिए जी उठा है। क्रूस पर बहाया यीश कि लहू के कारण जब कोई मसीही बनते हैं तब वह अपने पराने जीवन को दूर करके एक नया जीवन शरू करते हैं। बपतिस्मा मसीह के लिए किसी व्यक्ति के फैसले की एक खुला प्रदर्शन है। **(रोमियों 6: 3-7)** 3. बपतिस्मा मसीह के लिए हमारे अधीनता का प्रतीक है। यह परमेश्वर के इच्छानसार उनके रास्ते जीना और दुसरे मसीही के साथ हमारी पहचान का प्रदर्शन है। 4. प्रेरितों 8 की कहानी में, फिल्लिपस कूशी खोजे को यीश मसीह की सुसमाचार सुनाई। वह एक मसीही बना और तुरंत बपतिस्मा लिया। 5. **प्रेरितों 18:8** में, प्रेरित पौलस, कई लोगों को यीश मसीह की ओर ले आता है। अपने विश्वास घोषणा करने के लिए यह लोग तुरन्त ही बपतिस्मा लेता है। **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	निम्नलिखित प्रश्नों का उपयोग करके पाठों की समीक्षा करें: 1. मरकुस पूरे सुसमाचार में प्रभु यीशु कैसे पेश करता है? 2. मरकुस किस तरह का परिवार से था? 3. मरकुस ने अपने जीवन में क्या करना चाहता था? 4. मरकुस ने पहली मिशनरी यात्रा पर पौलस को निराश किया था, हम कैसे जानते हैं कि उसे फिर से सेवा के लिए पूरी तरह से बहाल किया गया? 5. यीशु द्वारा धरती पर किए गए सेवा के कुछ कार्य को लिखिए।	महान आयोग का अध्ययन करें **(मत्ती 28: 16-20)**: 1. ऐसा आदेश यीशु कैसे दे सकता है? **(पद 8)** 2. शिष्यों को दिए गए चार निर्देश क्या थे? 3. शिष्य बनने का क्या मतलब है?क्या यह एक जारी प्रक्रिया है? 4. अपने आदेशों का पालन करने के बदले यीशु ने उन्हें क्या वादा देता है?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. ऐसा एक कर्म का नाम दो जो हम प्रभु यीशु की सेवा में कर सकते हैं ? 2. अतीत में असफल होने के बावजूद हम कैसे सेवा में आगे बढ़ सकते हैं। 3. परीक्षणों और जीवन के तूफान में हम यीशु पर भरोसा कैसे कर सकते है।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या आपने अपना जीवन यीशु को दिया है और क्या आप एक नए जीवन के साथ उसके लिए जीना चाहते हैं? 2. क्या आपने यीशु की वचन की आज्ञाकारिता में बपतिस्मा लिया है? यदि नहीं तो क्यों?

	B8 – लेवल 3 कहानी 3- सुसमाचार के लेखक लूका।	B8 – लेवल 4 कहानी 3- आगे का रास्ता अन्तिम भोज।
	बाइबल अनुभाग: लूका 1:1-4; लूका 4:1-12 *मुख्य पद : लूका 19:10* **हम सीख रहे की :** 1. लूका ने जोर दिया कि प्रभ यीशु परमेश्वर के पुत्र होने होने के साथ ही प्रभु यीशु एक आँदर्श पुँरुष था। 2. प्रलोभन यह साबित करते हैं कि प्रभ यीशु पाप नहीं कर सकता और क्योंकि वह एक पवित्र, पापहीन व्यँक्ति है, वे पापियों का उद्धारक हो सकता है।	*बाइबल अनुभाग: लूका 22:14-20, 1 कुरिन्थियों 11: 23-31* *मुख्य पद : प्रेरितों 2: 41* **हम सीख रहे की :** 1. यीशु ने एक विशेष तरीके से उन्हें याद रखने का हमें आदेश दिया। 2. हमें इस याद को गंभीरता से लेना चाहिए।
पहचान कराने	लूका और प्रेरितों को थियुफिलुस के लिए लिखा गया था, हम उसके बारे में बहुत कम जानते हैं। उनके शीर्षक 'श्रीमान' **(लूका 3:1)** संकेत करता है कि वह एक सरकारी अधिकारी थे। उसका नाम का अर्थ है 'परमेश्वर का मित्र'। वह शायद रोमन साम्राज्य में एक जिम्मेदार अधिकारी होने के साथ एक मसीही भी था। लूका ने उसे लिखित प्रमाण दिया ताकि दूसरों के ज़बानी से उसके पास पहुँचते वक्त सन्देश में कोई चूक न हो।	छात्रों से उन तरीकों के बारे में सोचने के लिए कहें जिससे वे किसी ऐसे व्यक्ति जो अब उनके साथ नहीं है उन्हें तस्वीरों, या विशेष यादों के सहायता से याद करते है। यीशु ने जाते समय शिष्यों को याद रखने के लिए एक विशेष तरीका दिया।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. लूका एक यूनानी मसीही वैद्य था जो प्रेरित पौलुस के बहुत करीबी दोस्त था। 2. लूका ने यीशु को अपने जन्म के समय एक 'उद्धारकर्ता प्रभ यीशु' के रूपँ में संदर्भित किया **(लूका 2:11)** वह प्रभु थाँ जो देहधारी हुआ था। 3. लूका अभिलेख करता है कि यीशु अपने सामान्य बद्धि विकास में बिल्कल सही था। **(लूका 5:52)** ज्ञान में यीशँ की वृद्धि उनके माँनसिक विकास को दिखाता है, डील-डौलँ में उनकी वृद्धि उनके शारीरिक विकास को दिखता है। परमेश्वर के अनग्रह में बढ़ना उनके आध्यात्मिक विकास को दर्शाता है और मनँष्य के अनुग्रह में बढ़ना उनके सामाजिक विकास को दर्शाता हैं। 4. संक्षेप में यीशु के परीक्षाओं की व्याख्या करें **(लूका 4:1-13)** और दिखाएं कि यह कैसे दिखाता है कि वह दोषहीन था और वे परीक्षा में नहीं पड़ेंगे। **5. लूका 23** में हम यीशु की मौत का और उसके बारे में पिलातस, सूबेदार, और ककर्मी के कछ अद्भत टिप्पणियां की विवँरण देखते है जो दिखँाते है की यीँश में दोँषहीन है। **(लूका 23:14, 41 - 47)** समझाओ कि यीँश का पापहीन होना महत्वपूर्ण है अन्यथा वह हमारे पापों के लिँए मर नहीं सकता था। आज यह 'परिपूर्ण मनष्य' स्वर्ग में है और पापियों को उद्धार दिलाना चाहता है। वह उँन लोगों की भी देखभाल कर रहा है जो उन्हें उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में भरोसा किया है। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोँत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. आखिरी रात शिष्यों और यीशु एक साथ थे, यीशु ने रोटी और दाखरस ली और धन्यवाद किँया। उसने कहा कि रोटी उसका शरीर था जो उनके लिए टूटा हुआ था और दाखरस उसका खून है जो उनके लिए बहाया गँया था। फिर उसने उन्हें रोटी और दाखरस के द्वारा उन्हें याद करने के लिए कहा। **(प्रेरितों 22:14-20)** 2. शिष्यों को यह बात पूरी तरह से समझ में नहीं आया क्योंकि केवल यीशु ही जानता था कि जल्द क्या होने वाला था। लेकिन शिष्य निश्चिँत रूप से इस आदेश को याद करेंगे। 3. रोटी और दाखरस को लेना मसीही लोगों के लिए यीशु की मृत्यु और पीड़ा के बारे में सोचने और चिन्तन करने का एक विशँष तरीका है। **(1 कुरिन्थियों 11: 23-26)** 4. जैसे ही फसह का पर्व मिस्र में दासता से छटकारा पाने के याद का उत्सव था, ऐसे ही रोटी और दाखरस लैना मसीह द्वारा हमारे पापों से हमें उद्धार पाने के याद का अनुष्ठान करना है। 5. प्रभ यीशु अपने शिष्यों को उनके वापस आने तक रोटी और दाखँरस लेने के लिए कहता है। यह सिर्फ यीशु की जिंदगी और मृत्यु की याद नहीं थी लेकिन वादे किए गए परमेश्वर के राज्य कोँ याद दिलाता है। 6. यीशु अपने शिष्यों के साथ इस फसह का भोजन करना चाहता था क्योंकि लोगों के पापों के लिए बलिदान होकर यीशु खुद असली 'फसह का मेम्ना' बनने जा रहा था। यह शिष्यों कँे लिए अपने शरीर और रक्त देने का प्रतीक होगा। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोँत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	निम्नलिखित प्रश्नों का उपयोग करके पाठ की समीक्षा करें: 1. लूका के सुसमाचार का विषय क्या है? 2. लूका का पेशा क्या था? 3. उन्होंने थियुफिलुस को लेख क्यों लिखा? 4. अपने जन्म में यीशु को दिए गए नामों 'एक उद्धारकर्ता प्रभु मसीह' का महत्व क्यँा है? 5. परीक्षा के बारें में लूका क्यों अभिलेख करता है? **6. लूका 23:14, 41 - 47** देखें और चर्चा करें कि इन पुरुषों ने 'दोषहीन मनुष्य' के बारे में क्या कहा?	**1 कुरिन्थियों 11: 27-31**, में यह कहता हैं कि हम इन प्रतीकों को लेने से पहले खुद को जांचना चाहिए। चर्चा करें कि इसका क्या अर्थ है।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. आप प्रभ यीशु को कैसे देखते हैं - किसी अन्य व्यक्ति की तरह या एक दोँषहीन मनुष्य के रूप में? 2. क्या आपने इस दोषहीन मनष्य पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा किया है? यदि कियाँ है तो क्या आप दूसरों को उसके बारे में बता रहे हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. मसीही होते हुए क्या हम रोटी और दाखरस को लेते समय उसके प्रतिनिधित्व के बारें में गंभीरता से विचार करते हैं? 2. क्या हम इस नये वाचा में सराहना करते हैं जिसे हमें पुजारियों और बलिदानों के माध्यम से नहीं, लेकिन यीशु के कारण सीधे परमेश्वर के पास जा सकते हैं?

	B8 – लेवल 3 कहानी 4- सुसमाचार के लेखक यूहन्ना।	B8 – लेवल 4 कहानी 4- आगे का रास्ता मसीही होकर बढ़ना।
	बाइबल अनुभाग: यूहन्ना 20: 26-31 ***मुख्य पद : यूहाना 20:31*** **हम सीख रहे की :** 1. यूहन्ना जोर दे रहा है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। 2. प्रभु यीशु ने कई बार 'मैं हूं' का उपयोग किया है और ऐसा करने में परमेश्वर के साथ उनकी समानता का दावा कर रहा था क्योंकि परमेश्वर पुराने नियम में अपने आप को 'मैं हूं' कह कर बुलाया था। **(निर्गमन 3: 14,15)**	***बाइबल अनुभाग: 1 पतरस 2: 1-3, 2 पतरस 3: 18, प्रेरितों 17 - 10 -12*** ***मुख्य पद : 1 पतरस 2:2*** **हम सीख रहे की :** 1. मसीही को अपने विश्वास में दैनिक बढ़ना चाहिए। 2. परमेश्वर की कृपा और ज्ञान के बारे में जानने के लिए हमेशा हर किसी के लिए कुछ होता है।
पहचान कराने	यूहन्ना अपने सुसमाचार के शुरूआत यीशु को 'वचन' से संदर्भित करके करता है। शब्द का उपयोग करके हम दूसरों को समझाते हैं या अभिव्यक्त करते हैं। परमेश्वर अपने पुत्र, प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अपने आप को पूरी तरह से इस दुनिया को व्यक्त किया है। 2000 साल पहले जब परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र बना, वे कुंवारी मरियम से बैतलहम में पैदा हुआ था। हमारे लिए मरकर उसने हमें दिखाया है कि परमेश्वर हमें कितना प्यार करता है और इसलिए वह हमारे प्रति परमेश्वर के विचारों की अभिव्यक्ति है।	एक समूह में चर्चा करें कि चीजें कैसे बढ़ती हैं, जैसे, जानवर, बच्चे, पौधे, पेड़? उनके बढ़ने के लिए क्या जरूरी है? क्या होता है अगर उन्हें जो चाहिए वह प्राप्त नहीं होता?
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. यूहाना यीशु को 'वचन' कहकर संदर्भित करता है। **(यूहन्ना 1:1)** 2. यूहन्ना खुद को उस शिष्य बताता है जिसे यीशु प्यार करता था। **(यूहन्ना 20:2)** 3. यूहन्ना के सुसमाचार में 'मैं हूं' परमेश्वर का शीर्षक है और यीशु ने सात अलग-अलग तरीकों से परमेश्वर की विशेषताओं या गुणों को संदर्भित किया है: ☐ जीवन की रोटी। **(यूहन्ना 6:35, 41,48,51)** ☐ जगत की ज्योति। **(यूहन्ना 8: 12,9:5)** ☐ द्वार। **(यूहन्ना 10: 7,9)** ☐ अच्छा चारवाहा। **(यूहन्ना 10: 11,14)** ☐ पुनरुत्थान और जीवन। **(यूहन्ना 11: 25,26)** ☐ मार्ग, सत्य और जीवन। **(यूहन्ना 14: 6)** ☐ दाखलता। **(यूहन्ना 15:1, 5)** 4. यूहन्ना ने अपना ससमाचार लिखा ताकि हम प्रभ यीश में विश्वास कर सकें और जीवन को पा सकें। **(यूहन्ना 20: 30,31)** **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. मसीही होने के नाते हमें जीना का एक निश्चित तरीका है। हम अपने व्यवहार और कार्यों में मसीह के चरित्र को प्रतिबिंबित करना चाहिए। बाइबल में कई वाक्य हैं जो हमें यह जानने में मदद करती हैं की परमेश्वर का सम्मान करने है तो हमें कैसे जीना चाहिए। **2. 1 पतरस 2:1** बताता है कि हमें धोखाधड़ी, पाखंडी, और ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए या कठोर बातें कहना नहीं चाहिए। 3. 1 पतरस कहता है की नए मसीही एक नए पैदा हुए बच्चे की तरह है। बढ़ने के लिए उन्हें दूध पीना चाहिए। यह दूध परमेश्वर का वचन है। वृद्धि कभी नहीं रुकती है और जैसे ही बच्चा बड़ा हो जाता है, उसे भोजन की जरूरत होती है। इसी तरह, मसीही के जीवन में कभी भी ऐसे वक्त नहीं होता जब उन्हें बढ़ने में मदद करने के लिए भोजन (बाइबल) की आवश्यकता नहीं होती। **4. 2 पतरस 3:18** हमें अपने प्रभ की कृपा और ज्ञान में बढ़ने के लिए सिखाता है। बच्चों के साथ चर्चा करें कि कृपा और ज्ञान क्या हैं और हम उनमें कैसे बढ़ सकते हैं। 5. जब बिरीया में पौलस और सीलास ससमाचार का प्रचार कर रहे थे, लोग दिलचस्प और उत्सुक हुए । **प्रेरितों 17** में यह कहता है कि वे ग्रहणशील थे, उत्सुक थे और रोज़ाना शास्त्रों की खोज करते थे । परमेश्वर के बारे में सीखने के लिए उन्हें कितना उत्साह था ! **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	ऊपर दिए सात 'में हूँ' विशेषताओं को लेकर चर्चा करें कि इनमें से हर एक विशेषता से कैसे पता चलता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।	बिरीया के लोग जब पौलस और सीलास सीखाते समय सीखने के लिए उत्सक थे, और शास्त्रों को प्रतिदिन खोजते रहे की ये बातें सही है कि नहीं। **(प्रेरितों 17: 10-12)** हमें सावधान रहना चाहिए की हम चीजों पर ऐसे ही विश्वास न करे क्योंकि एक प्रचारक या नेता ने वैसे कहा था। हमें बाइबल से खुद जवाब खोजने की ज़रूरत चाहिए।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. बच्चों को यह कहने के लिए चनौती दें कि क्या उनका मानना है कि यीशु भगवान का पुत्र है। 2. यदि हां, तो क्या उन्होंने उस पर भरोसा रखा है और अनंत जीवन प्राप्त किया है? **(यूहन्ना 1: 12,13, 5: 24)** 3. अगर हमें अनन्त जीवन प्राप्त हुआ है तो हम स्वर्ग के रास्ते जा रहे हैं। और हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए हर दिन हमे बाइबल पढ़ना चाहिए। और हर दिन हमें प्रभ यीश को उसकी दया के लिए धन्यवाद देना चाहिए। और बाइबल में जो कछ भी हम पढ़ते हैं उसे जीवन में पालन करने की शक्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या हम हर दिन बढ़ने की कोशिश करते हैं? क्या हम बाइबल पढ़कर प्रार्थना करते है और परमेश्वर के बारे में अधिक जानना चाहते हैं ताकि हमारा विश्वास मजबूत किया जा सके? परमेश्वर के वचन का अध्ययन करके और पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होकर ही हम जीवन में बढ़ सकते है। 2. बिरीया के लोगों के साथ हम अपने आप को कैसे तलना कर सकते हैं? क्या हमे सिखाते लोगों को ध्यान से सनते हैं? क्या हम शास्त्रों को उत्तर के लिए प्रतिदिन खोजते हैं? 3. चर्चा करें कि हम कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है।

	B9 – लेवल 3 कहानी 1- मूसा टोकरी में बच्चा।	B9 – लेवल 4 कहानी 1- मूसा राजकुमार।
	बाइबल अनुभाग: निर्गमन 1: 6 - 14, 22 और 2: 1-10 *मुख्य पद : इब्रनियों 11: 23* **हम सीख रहे की :** 1. इस्राएलियों मिस्र में ताक़त और संख्या में इतनी वृद्धि प्राप्त किया की फिरौन ने सोचा कि युद्ध के समय वे उनके लिए खतरा पैदा करेंगे। इसलिए उसने आदेश दिया कि सभी नवजात बेटे को मार दिया जाए। 2. परमेश्वर मूसा द्वारा फिरौन को हराकर इस्राएलियों को दासता से मुक्त करने जा रहा था, इसलिए उसने छोटे मूसा को नील नदी में डूबने से संरक्षित रखा।	*बाइबल अनुभाग: निर्गमन 1: 5-22; 2: 1-25* *मुख्य पद : इब्रनियों 11: 23* **हम सीख रहे की :** 1. इस्राएलियों मिस्र में ताक़त और संख्या में इतनी वृद्धि प्राप्त किया की फिरौन ने सोचा कि युद्ध के समय वे उनके लिए खतरा पैदा करेंगे। इसलिए उसने आदेश दिया कि सभी नवजात बेटे को मार दिया जाए। 2. मूसा के जीवन के लिए परमेश्वर को एक योजना था - वे मिस्र की दासता से इस्राएलियों को मुक्त करने जा रहा था।
पहचान कराने	????????? ?????????	B7 & B8 की समीक्षा करें। बच्चों को समझाएं कि युसूफ की मृत्यु के वक्त इस्राएल एक बड़ा विस्तारित परिवार था। वे एक बड़े राष्ट्र बन गए, जो नए फिरौन को चिंतित किया और उसने उन्हें ग़ुलाम बना दिया। लेकिन परमेश्वर उन्हें हमेशा याद करके इस्राएल राष्ट्र के लिए अपनी योजना को पूरा करेंगे।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. फिरौन राजा बना **(1:7)** और इस्राएलियों की समृद्धि उत्पीड़न में बदल जाती है **(1: 8-11)** लेकिन परमेश्वर की नजर उनपर था और उन्हें संरक्षित रखा गया। **(1:12)** 2. फिरौन ने संख्या को और बढ़ने से रोकने के लिए एक आदेश दिया कि सभी नवजात बेटे को मार डाला जाए। **(1: 15-20)** 3. मूसा, अम्राम और योकेबेद का पुत्र था। पैदा होने के बाद तीन महीने के लिए उन्होंने उसका देखभाल किया। फिर उसे एक छोटी टोकरी में रखा और नील नदी के किनारे छोड़ा दिया। **(2:1-3)** 4. परमेश्वर ने मूसा के जीवन को संरक्षित किया। और ऐसा करने के लिए परमेश्वर ने मूसा की माँ, बहन और फिरौन कि पुत्री की उपयोग किया। **(2: 4-9)** 5. फिरौन की पुत्री के बेटे होने के परिणामस्वरूप मूसा को उच्च स्तर की शिक्षा मिली **(प्रेरितों 7: 22)** और वे मिस्र के सिंहासन के उत्तराधिकारी भी थे। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. फिरौन भयभीत था कि इस्राएली मिस्र राज्य के लिए खतरा होंगे, इसलिए उन्होंने उन्हें बढ़ने से रोकने के लिए उन्हें गुलाम बनाया। **(1; 8-11)** 2. इस्राएली ओर मजबूत हो गए, इसलिए फिरौन ने धाईयों को जन्म देने वाले सभी बच्चों को मारने का आदेश दिया। लेकिन धाईयों ने उनके आदेशों के खिलाफ जाकर बच्चों की जान बचाने लगी। **(1: 15-20)** 3. मूसा के जन्म के तीन महीने बाद, एक छोटी सी नाव बनाई गई थी और उसकी मां ने उसे नील नदी के किनारे रखा। **(2:1-3)** 4. फिरौन की पुत्री ने मूसा को बचाया और अंततः मूसा की मां उसका दाई बनी। **(2:4-9)** 5. मूसा महल में बड़ा हुआ। और बड़े होने पर, उन्होंने इस्राएली दासों की मदद करके अपनी शक्ति दिखाने शुरू करने लगा। 6. उसने एक मिस्री को एक इस्राएली दास को वह मारते हुए देखा और उसने उसका हत्या कर दिया। और इस कारण उसे मिध्यान देश की ओर भाग गया। **(2: 11-15)** **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	में बच्चों से संक्षेप में पूछें की उन्होंने क्या सीखा: i) मूसा के जन्म किस परिस्थिति में हुआ था। ii) उसका संरक्षण। iii) उसकी देखभाल। iv) उनकी शिक्षा। v) मिस्र में वह क्या स्थिति हासिल कर सकता था।	अध्ययन 1 से इस पाठ से संबंधित प्रश्न पूछकर की समीक्षा करें। इस बारे में सोचिए कि कैसे धाईयों और मूसा के माता पिता ने देश का कानून का पालन नहीं किया। इस बारे में चर्चा करे कि क्या मसीही को देश का कानून की पालन करना चाहिए या ऐसी कोई परिस्थितियां है जहाँ ऐसा करना मुश्किल होगा।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** परमेश्वर ने बच्चे मूसा के जीवन को नियंत्रित और निर्देशित किया क्योंकि उनके जीवन के लिए परमेश्वर को एक महान योजना था। ऐसे ही जब हम उद्धार के लिए उनके पुत्र प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे तो वे हमारे जीवन को नियंत्रित और मार्गदर्शन देंगे।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. मूसा के माता-पिता और धाईयों परिस्थिति निराशाजनक होने पर भी सही के लिए खड़े हुए, क्योंकि वे परमेश्वर में भरोसा करते थे और उन्हें डरते थे। क्या हम कठिन समय में प्रभु के लिए सच्चे रहते हैं? 2. मूसा के पाप लगभग प्रत्यक्ष में था। हम कभी कभी सोचते हैं कि हम छोटे पापों करने के बाद बच निकल सकते है। लेकिन पापी हमेशा पकड़ा जायेगा, किसी गवाह से या वह परमेश्वर से जिससे कुछ भी छिपा नहीं है।

	B9 – लेवल 3 कहानी 2- मूसा बड़ी गलती।	B9 – लेवल 4 कहानी 2- मूसा चरवाहा।
	बाइबल अनुभाग: निर्गमन 2: 11-22 *मुख्य पद : गिनती 32: 23* **हम सीख रहे की :** 1. मूसा अपने लोगों की मदद करना शुरू करना चाहता है। 2. भले ही हम इसे दूसरे से छिपाने की कोशिश कर सकते हैं लेकिन हम प्रभु यीशु से हमारे पाप को छिपा नहीं सकते। 3. जब हम अपने पाप से पश्चाताप करके प्रभु यीशु के सामने सच्चाई से स्वीकार करे तो वह हमें माफ कर देंगें। (1 यूहन्ना 1:9)	*बाइबल अनुभाग: निर्गमन 3: 1-16; 4: 1-17* *मुख्य पद : प्रेरितों 7: 35* **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर मूसा को प्रकट होकर उससे अपने लोगों को बचाने के लिए वापस जाने के लिए कहता है। 2. परमेश्वर मूसा से वादा करता है की वे उसके साथ हमेशा रहेंगे।।
पहचान कराने	बच्चों को याद दिलाएं कि कैसे पाठ 1 के अंत में कैसे मूसा फिरौन की पुत्री का बेटा बना और महल में बड़ा हुआ था। इस अध्याय में वह अब चालीस वर्ष का है **(प्रेरितों 7:23)** और इस्राएलियों के प्रति मिस्री के व्यवहार के बारे में वह बहुत चिंतित था। मिस्री की हत्या **(निर्गमन 2:14)** उसने जोश में किया, लेकिन हत्या करना पाप था। फिर भी परमेश्वर अपने लोगों को आज़ाद करने के लिए मूसा का उपयोग करने जा रहा था, लेकिन यह काम करने के लिए पहले उसे चालीस साल इंतजार करना था।	बच्चों को समझाओ कि निर्गमन 3:1 में बताए गए होरेब पर्वत और सीनै पर्वत एक ही है। और मूसे के जीवन में इस का एक बहुत ही महत्वपूर्ण जगह है। **निर्गमन 3:12** में परमेश्वर मूसे को बताता है: 'तुम इसी पाहड़ पर परमेश्वर की उपासना करोगे।' इस पर्वत पर परमेश्वर ने मूसा से बात की और उसे दस आज्ञाओं / वाचा दी। **(19: 1-20)**
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. मूसा इस्राएलियों की दुर्दशा के प्रति बहुत संवेदी था, लेकिन परमेश्वर उससे नाराज था क्योंकि उसने मिस्री किया था। ऐसे स्थिति में उसे मार्गदर्शन के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने चाहिए था। 2. मूसा ने सोचा कि वह अपने आप ही स्राएलियों को आजाद करेगा, लेकिन यह परमेश्वर की योजना नहीं था। 3. जब उसका पाप का खुलासा हुआ, वह मिध्यान देश भाग गया। **(2:15)** 4. मिध्यान में एक कूएं में वह अपनी भावी पत्नी सिप्पोरा से मिले **(2:21)** और उन्हें दो बेटे पैदा हुए। एक बेटे का नाम गेर्शोम था जिसका मतलब 'अजनबी' था। यह नाम मिध्यान देश में मूसा की अकेलापन की भावना व्यक्त करता था। उसको एलीएजेर नाम का एक और बेटा भी था जिसका अर्थ है 'प्रभु मेरा सहायक' मिस्री को मारने की सजा में उसे मारने की कोशिश कर रहे फिरौन से उसे बचाने के लिए मूसा परमेश्वर का आभारी था। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. मूसा मिस्र से भाग कर अब मिध्यानियों के बीच रह रहा था। 2. परमेश्वर जलती हुई झाड़ी से मूस से बात की और मूसा अपने जूते को सम्मान में उतार दिया। जब परमेश्वर ने व्यक्त किया कि वह चाहते है कि मूसा जाकर इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाए, मूसा ने इस काम के लिए अपना अपर्याप्तता घोषित किया। **(3:10-11)** 3. जबकि मिस्र के कई देवता थे, परमेश्वर ने मूसा से कहा की वह जाकर इस्राएलियों को बताये, 'जिसका नाम में हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है' **(3:14)** - सच्चा और युगायुग एक सा रहने वाला एकमात्र परमेश्वर! 4. यह स्थापित करने की वह ही वास्तव में सच्चा परमेश्वर है और अपनी शक्ति को दिखाने के लिए परमेश्वर मूसा की लाठी का उपयोग करता है और इसे एक सांप में बदल देता है। 5. अन्त में परमेश्वर हारून को उसके तरफ से बोलने के लिए सहमत हुए। और परमेश्वर की आदेश को मूसा हारून को बताएंगे। **(निर्गमन 4:16)** 6. मूसा इस्राएलियों को आज़ाद करने की मांग लेकर फिरौन को मिलने मिस्र फाटा है। यह शायद उनके जीवन की सबसे बड़ी चुनौती थी। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**प्रेरितों 7: 23-29** को पढ़कर इस पाठ की समीक्षा करें। और बच्चों से पाठ 2 से संबंधित पूछे गए प्रश्न पूछें ताकि उन्हें यह पाठ पूरा करने में मदद मिले।	मूसा के एक पोस्टर बनाएं जो परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से बाहर लाने के लिए भेजे जाने पर उसका सोच को दिखाता है।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हमारी विचारों के अनसार नहीं उनके इच्छानुसार उसके सेवा करने को हमें मार्गदर्शन के लिए प्रभु यीशु से पूछने का महत्व। 2. हमारे पाप को ढंकने के बजाय उसे स्वीकार करना। बच्चों को याद दिलाएं कि परमेश्वर सभी को जानता है और उनसे छिपकर हम कुछ भी कर नहीं सकते।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. जो परमेश्वर मूसा को प्रकट हुआ वही आज हमारे दिल और जीवन में रह सकते हैं। बच्चों को चुनौती दें कि यदि परमेश्वर अपने दिल में रहकर उनके जीवन को नियंत्रित करता है की नहीं। 2. अगर परमेश्वर हमें कुछ करने के लिए मसीह के अनुयायियों के रूप में बुलाता है, वह उस काम पूरा करने में हमें मदद करेगा। जैसा कि हारून के मामले में उसे मूसा की ओर से बोलने के लिए चुना गया था।

	B9 – लेवल 3 कहानी 3- मूसा जलती झाडी।	B9 – लेवल 4 कहानी 3- मूसा नेता।
	बाइबल अनुभाग: निर्गमन 2: 23-25; 3: 1-10 *मुख्य पद : निर्गमन 15: 11* **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर जानता था कि इस्राएलियों को मिस्र के नए राजा ने गुलाम बना दिया था लेकिन वह उन्हें वापस कनान देश लाने जा रहा था। 2. परमेश्वर मूसा को मिस्र से इस्राएलियों को आज़ाद करके कनान देश ले जाने के लिए बुलाया।)	*बाइबल अनुभाग: निर्गमन 7: 1-25* *मुख्य पद : नीतिवचन 29: 1* **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर की शक्ति किसी भी इंसान या संगठन की तलना में अधिक है - वह शक्तिशाली है - वह सर्वशक्तिशाली है 2. कुछ लोग अपने परेशानियों के वक्त में ही परमेश्वर को याद करता हैं और जब सब चीजें अच्छी तरह से चल रही है वह परमेश्वर को भूल जाते है।
पहचान कराने	बच्चों के साथ वर्तमान स्थिति पर चर्चा करें; मूसा मिस्र छोड़कर मिध्यान में अपने नए जीवन में बस गया है। उसे मिस्र लौटने का कोई इरादा नहीं है, क्योंकि फिरौन उसे मारना चाहता है। इस्राएलियों अभी भी मिस्र में बहुत पीड़ा सह रहे थे और मदद के लिए परमेश्वर से याचना कर रहे थे। परमेश्वर मूसा के माध्यम से उसके याचिका का जवाब देना शुरू कर देता है।	बच्चों के साथ विचार करें कि मिस्र में उसके साथ होने वाले चीज़ों के बारे में बिल्कल बेखबर होकर मूसा कैसे महसूस कर रहे थे। जब हम किसी चौज़ के बारे में परेशान होते हैं कभी-कभी हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत होती है कि आगे क्या होगा, ऐसा क्यों हो रहा है और हमारी मदद कौन कर रहा है। परमेश्वर मूसा के लिए **निर्गमन 7: 1-5** में ऐसा किया।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. इस्राएलियों की हालत को परमेश्वर ने - देखा, सुना और वह अपने दुखों को जानता था। **(2: 23-25)** 2. परमेश्वर उनकी रोना सुनता है और सीनै पर्वत में मूसा को प्रकट होता है। जलती झाडी की घटना से वह स्थापित करता है की वास्तव में वह कौन है और उसकी पवित्रता का भी प्रदर्शन करता है। 3. परमेश्वर इस्राएलियों के लिए उनकी देखभाल के बारें में बताता है **(पद 7)** कैसे वह उन्हें फिरौन से छड़ाएगा **(पद 8)** और यह भी की उन्हें मिस्र से बाहर लाने के लिए वे मूसा का उपयोग करने जा रहा है। **(पद 10)** 4. बच्चों को याद दिलाएं कि बाइबल में 'पवित्र' शब्द का पहला ज़िक्र **निर्गमन 3: 5** में होता है। और अपने जूते को उतारकर मूसा ने यह स्वीकार किया की जिस जगह पर वह खड़ा है, वह पवित्र था। हमारे परमेश्वर को हमेशा श्रद्धा और सम्मान देना चाहिए। 5. जलती हुई झाड़ी में परमेश्वर के साथ उनकी मुलाकात से मूसा परमेश्वर की पवित्रता और उनकी शक्ति के बारें मंथ कुछ सीखने जा रहा था। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. परमेश्वर ने मूसा को एक शक्तिशाली व्यक्ति बनाया - 'मैंने तुझे फिरौन के लिए परमेश्वर सा ठहराता हूँ' **(7:1)** मूसा सुनने का योग्य था लेकिन फिरौन सारे आदेशों का इनकार कर दिया। 2. मूसा और हारून ने प्रभ के आदेश का पालन किया और जब हारून ने फिरौन के पहले अपनी लाठी डाली और वह एक सांप बन गया और जब फिरौन जादूगरों ने अपनी लाठी डालीं वे भी साँप बन गए। लेकिन हारून की लाठी ने जादूगरों की लाठी को निगल गई। इससे हम परमेश्वर की शक्ति देख सकते है। **(7: 8-12)** 3. मूसा और हारून ने लाठी से नील नदी के जल पर मारा और यह लहू में बदल गया। मछलियों मर गई, और पानी पीने, खेती, स्नान और मछली पकड़ने के लिए बेकार हो गया। **(7: 20-21)** 4. फिरौन ने मूसा की मांगों का विरोध किया और लोगों को जाने नहीं दिया। **5. अध्याय 8-10** को पढ़कर यह जाने की इस्राएलियों को आज़ाद करने के लिए परमेश्वर ने फिरौन और मिस्र पर और क्या विपत्तियाँ भेजा था। लेकिन उसका दिल और कठोर हो गया और उसने फिर उन्हें जाने से इनकार कर दिया। फिर से फिरौन के इनकार ने यह सुनिश्चित किया की अन्त में हमेशा परमेश्वर की योजना संभव होता है। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**प्रेरितों 7: 30-35** के संदर्भ में सबक की समीक्षा करके बच्चों को समझाएं। बच्चों को दिखाएं कि कैसे स्तिफनुस ने मूसा और जलती झाडी की घटना का उल्लेख किया था।	बच्चों के साथ चर्चा करें की मुख्य पद और इस अध्याय का संबंध क्या है।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर पवित्र है और हम उसे श्रद्धा और सम्मान देना चाहिए जिसका वह योग्य है। दूसरों कई लोगों की तरह हमें परमेश्वर का नाम कभी व्यर्थ में लेना नहीं चाहिए। 2. परमेश्वर पवित्र है फिर भी उसने हम जैसे पापियों के लिए मरने के लिए अपने पत्र, प्रभ यीश मसीह को भेजा। अगर हम परमेश्वर के पत्र पर भरोसा करते हैं वे हमारे कोई भी पाप को क्षमा करने के लिए तैयार है।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. नदी को लहू में बदलना एक चमत्कारी घटना थी, लेकिन जब हम प्रभ यीश और क्रूस पर उनके काम पर भरोसा करते हैं तब परमेश्वर हमारे जीवन में इससे ज़्यादा चमत्कार कर सकते हैं। **2. भजन संहिता 105: 23-29** पढ़े और विचार करें कि सारे चीज़े परमेश्वर के नियंत्रण में कैसे है। आज की दुनिया में इसके निहितार्थ पर विचार करें

	B9 – लेवल 3 कहानी 4- मूसा परमेश्वर का सन्देश लाना।	B9 – लेवल 4 कहानी 4- मूसा उद्धारक।
	बाइबल अनुभाग: निर्गमन 5: 1-9, 22,23; 6: 1-9 *मुख्य पद : इब्रानियों 10: 31* **हम सीख रहे की :** 1. मूसा और हारून ने फिरौन से मिला और अनुरोध किया की वह इस्राएलियों को जाने दे, लेकिन फिरौन उनका एक नहीं सुना। 2. प्रभ मूसा को आश्वासन देता है कि फिरौन इस्राएलियों को ज़रूर जाने देगा क्योंकि वह उन्हें जाने के लिए मजबूर करने वाला था।	*बाइबल अनुभाग: निर्गमन 11: 1-10; 12: 1-13 ; 21-42* *मुख्य पद : यूहन्ना 1: 29; 1 कुरिन्थियों 5: 7* **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर ने मिस्रियों को उनके अवज्ञा के लिए अपना न्याय दिखाया, लेकिन उन्होंने इस्राएलियों को उनकी आज्ञाकारिता के लिए अपनी दया दिखायी। 2. फसह का मेम्ने प्रभु यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की ओर इशारा करता है जिसने क्रूस पर उसकी मृत्यु से हमारे पापों की सजा अपने ऊपर लिया था।
पहचान कराने	बच्चों को समझाओ कि परमेश्वर ने मूसा को वापस मिस्र जाने के लिए आदेश दिया था। आगे के बारें में सोचकर मूसा डरा हुआ था। परमेश्वर ने उसके साथ रहने का वादा किया लेकिन मूसा को यह नहीं पता था कि फिर से उसे देखने पर फिरौन का प्रतिक्रिया कैसे होगा। इसलिए परमेश्वर ने उसका भाई हारून को उसकी मदद करने के लिए बुलाने के लिए कहा।	मिस्र जैसे शक्तिशाली राष्ट्र परमेश्वर की अब्रहम और इस्राएलियों के प्रति अपने वादे को पूरा करने से रोक नहीं सका। इस आखिरी विप्पति के परिणामस्वरूप मिस्र में गलामी के अंत हुआ और इस्राएलियों लाल समुद्र से बीच से होंकर जंगल में पहुँचा। अब इस्राएलियों को परेश्वर की न्याय से सुरक्षित रहने के लिए मूसा कि आज्ञा का पालन करना होगा।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को पेश करें** **चर्चा करें और समझाएं:** 1. जब इस्राएलियों को जाने देने के लिए कहा गयाफिरौन ने मूसा और हारून द्वारा परमेश्वर के अनुरोध का पालन करने से इंकार कर दिया। **(5:4)** 2. फिरौन ने इस्राएलियों के काम का बोझ को बढ़ाकर उन्हें ईंट बनाने के लिए पुआल अपने आप इकट्ठा करने का आदेश दिया। **(5: 6, 7)** 3. मूसा ने इस मामले के बारे में परमेश्वर से बात की और उसने उसे आश्वासन दिया कि वह मिस्र से इस्राएलियन को आज़ाद कर देगा। **(5: 22, 23 - 6: 1)** 4. **निर्गमन 6: 6-8** में परमेश्वर ने 'में करूंगा' 7 बार कहा और **निर्गमन 6:2** में कहा 'में यहोवा हूँ' वह मूसा और हारून को अपनी शक्ति और उसके वादों पर विश्वास कराना चाहता था। परमेश्वर ने यह भी सुनिश्चित किया कि, इसके तुरंत बाद, फिरौन और मिस्र देश पर 10 विपत्तियों (पीड़ा) भेजने पर वे भी उनके शक्ति देखेंगे। 5. मूसा इस बात इस्राएलियों से भी कहते है लेकिन वे बहुत निराश थे।और अपने दासता और उत्पीड़न से इतना टूटा हुआ था की उनके लिए कुछ भी विश्वास करना मुश्किल था। **(6:9)** **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. मूसा और हारून ने फिरौन को चेतावनी दी थी की यदि उसने 9 विपत्तियों को अनदेखा क्या थो परमेश्वर और नाश करने वाले थे। **(भजन संहिता 105: 26-36)** फिर अंतिम चेतावनी दी गई। **(11: 4-6)** 2. फसह का आयोजन किया गया और इस्राएलियों को एक निर्दोष मेम्ने के खून को अपने घर के द्वार के दोनों अलांगों और चौखट के सिरे पर लगाने का निर्देश दिया जाता है। 3. मेम्ने के महत्व की व्याख्या करें: यह एक बलिदान कैसे था, घर में पहिलौठे पत्र के स्थान पर वह मर रहा था। पहिलौठे पत्र को मरने से बचने के लिए मेम्ने का मरना ज़रूरी था। **(12: 1-7)** 4. मध्यरात्रि उन पर झटका गिरा और मिस्र के हर पहिलौठे बच्चे को मर डाला गया। लेकिन इस्राएली बच्चों को बचाया गया क्योंकि मेम्ने की लहू दरवाजे के अलांगों और चौखट पर लगाया था। **(12: 29, 30)** 5. अंत में फिरौन ने इस्राएईलों को जाने दिया। 430 सालों के बाद अब मिस्र से इस्राएलियों का निर्गमन शुरू होता है। **उत्पत्ति 15: 13,14** में अब्रहम के लिए परमेश्वर का वादा पूरा हो रहा था। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	गौर करें कि परमेश्वर ने मूसा से पहले ही क्या कहा था फिर भी मूसा ने फिरौन से इंकार सुनने के बाद परमेश्वर से कैसे प्रतिक्रिया किया। इस्राएलियों ने मूसा और हारून को देखा और उन्हें दोषी ठहराया, बदले में मूसा, परमेश्वर को दोषी ठहराया। एक बार फिर से परमेश्वर ने दिखाया की अपने उद्देश्य को समझाने के लिए वे कितना सहनशील और दयालु था। और उनके प्रति उनका उद्देश्य और वादा था 'मैं भगवान हूँ'	बच्चों को यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करें कि फसह क्या दर्शाता है: इस्त्राइलियों के स्थान में निर्दोष खून का बलिदान। यह भी विचार करें कि यह आने वाले एक बड़ा बलिदान का प्रतीक है। (हमारे स्थान पर निर्दोष प्रभु यीशु के बलिदान - वह परमेश्वर का मेम्ना था)
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. परमेश्वर चाहता है कि हम यह समझें कि वह एक सर्वशक्तिशाली है। 2. परमेश्वर चाहता है कि हम यह समझें कि परमेश्वर की अवज्ञा करना बहुत गंभीर बात है। 3. परमेश्वर चाहता है कि मश्किल समय पर भी हम हमेशा उस पर भरोसा कर सकते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि वह हमें कभी त्याग नहीं देगा, और हमारे जीवन के लिए हमेशा उसका एक योजना है।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या हम अपने पाप से मुक्त करने के लिए भुगतान की गई महान कीमत का एहसास करते हैं? क्या हम समझते है की यीशु ने इस कीमत का भुगतान किया और क्रूस पर मरकर हमें छुड़ाया? 2. क्या हमारे पाप को अपने ऊपर लेने और परमेश्वर के साथ सही रिश्ता बनाना संभव करने के लिए हम प्रभु का आभारी हैं? हमें बस इतना करना है कि उन पर भरोसा करें और अनन्त जीवन के दान को स्वीकार करें।

	B10 – लेवल 3 कहानी 1- मूसा फसह का मेम्न।	B10 – लेवल 4 कहानी 1- मूसा लाल समुद्र के पार।
	बाइबल अनुभाग: निर्गमन 12: 1-14; 29-36 ; 50,51 ***मुख्य पद : निर्गमन 12: 13*** **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर ने मिस्रियों को उनके अवज्ञा के लिए अपना न्याय दिखाया, लेकिन उन्होंने इस्राएलियों को उनकी आज्ञाकारिता के लिए अपनी दया दिखायी। 2. यीशु सर्वश्रेष्ठ बलिदान था और हमारा उद्धारक है।	***बाइबल अनुभाग: निर्गमन 11: 1-10; 12: 1-13 ; 21-42*** ***मुख्य पद : यूहन्ना 1: 29; 1 कुरिन्थियों 5: 7*** **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर इस्राएलियों के साथ था। 2. इस्राएलियों को परमेश्वर की सुरक्षा और मदद पर संदेह था। 3. परमेश्वर ने एक बार फिर से मिस्रियों से उन्हें बचाकर अपने लोगों के लिए अपनी शक्ति और प्यार साबित कर दिया।
पहचान कराने	बच्चों से कुछ त्यौहार के बारे में सोचने के लिए कहें जिन्हें हम मनाते हैं और वे क्या संकेत करते हैं उदाहरणः क्रिसमस, ईस्टर आदि। समझाएं कि कई त्यौहार हमारे लिए परमेश्वर ने जो किया है, उसके बारे में एक महत्वपूर्ण अनस्मारक हो सकता है। उनसे पूछें कि क्या उन्होंने कभी भी यहूदी त्यौहार - फसह के पर्व के बारे में सुना है। आज की कहानी में, हम फसह के बारे में जानेंगे।	बच्चों से यह कल्पना करने के लिए कहें कि वे एक ऐसे जगह एक लंबी यात्रा पर जा रहे हैं जहाँ वे पहले कभी नहीं गए है। उन्हें रास्ता दिखाने के लिए एक नक्शा या किसी की सहायता की ज़रूरत होगी। परमेश्वर द्वारा प्रतिश्रत देश की ओर जाने के लिए इस्राएलियों को भी इसकी ज़रूरत थीं। परमेश्वर ने उन्हें एक विशेष तरीके से अपनी यात्रा के लिए निर्देशित किया।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. बच्चों के साथ पिछले विपत्तियों के बारें में समीक्षा करें और समझाओ कि यह अंतिम विपत्ति सबसे बुरा और विनाशकारी था। परमेश्वर यह दिखाने जा रहा था कि वह फिरौन से ज्यादा शक्तिशाली था। 2. जो भी करना था उसके बारें में परमेश्वर ने मूसा और हारून को विशिष्ट निर्देश दिए। **(पद 1-14)** 3. इस्राएलियों को मृत्यु से बचने के लिए निर्दोष मेम्ने का बलि देकर उसके खून को घर के दरवाजे पर लगाना था। 4. मेम्ने का महत्व समझाओः यह कैसे एक बलिदान था, घर के पहिलौठे पुत्र के स्थान पर एक मेम्ने का मारा जाना। 5. समझाओ कि फसह का पर्व एक यहूदी त्यौहार है जो उस रात के सम्मान में है जब परमेश्वर ने उन घरों को पारित किया और मृत्यु दण्ड से सुरक्षित रखा जिनमें मेम्ने का खून लगा हुआ था। और जिन में खून नहीं दिखा उन घरों का पहिलौठे पुत्र मारे गए। 6. मुक्ति के अर्थ की व्याख्या करें; कैद से वापस ख़रीदना / गुलामी से बचाना। पराने नियम में परमेश्वर ने पापियों से जानवरों की बलिदान स्वीकार की। जब यीशु आया तो उसने हमारे पापों के लिए अपना निर्दोष जीवन बदले में दिया। वह हमारा उद्धारक है - उसने हमें पाप की शक्ति से छुड़ाया और परमेश्वर से हमारे रिश्ते को सुधारा। परमेश्वर के बलिदान से अब पशु के बलिदान का आवश्यक नहीं था। 7. आखिरकार फिरौन ने इस्राएलियों को जाने देने के लिए तैयार हो गया - परमेश्वर ने उनके लिए अपना वादा को पूरा किया। **(12: 31, 32)** **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. परमेश्वर ने इस्राएलियों को मुक्त करके मिस्र से बाहर ले आया। उन्होंने दिन में मेघ के खंभे में और रात के समय आग का खंभे में होकर उनके आगे आगे चला। तब उन्हें पता चला कि वह मार्गदर्शन देकर उनकी मदद कर रहा था। **(13: 21, 22)** बच्चों के साथ चर्चा करें कि कभी-कभी लोग इस तरह के चिन्ह या अद्भुत काम देखने चाहते हैं ताकि वे जान सकें कि परमेश्वर उनके साथ है। परमेश्वर अब हमारे साथ है और वे बाइबल और पवित्र आत्मा के माध्यम से हमें मार्गदर्शन देते है - अगर हम उस पर भरोसा करें। 2. मिस्र से मुक्त होने पर इस्राएलियों के राहत के बारे में सोचिए। सोचो की अभी तक कि यह राहत कैसे डर में बदला होगा जब उन्होंने सना कि फिरौन की सेना उन्हें वापस लाने के लिए पीछा कर रहे है। **(14:10)** 3. इस्राएलियों घबराहने लगा और गुस्सा होकर परमेश्वर को दोष देना शुरू किया। लेकिन मूसा ने उन्हें शांत रहने के लिए याद दिलाया। परमेश्वर उनके लिए लड़ेंगे। मूसा परमेश्वर पर भरोसा करना सीख रहा था। **(14:13)** 4. परमेश्वर ने लोगों को आगे बढ़ने के लिए कहा और वह लाल समुद्र के बीच से उनके लिए एक बचने का रास्ता निकलता है। फिर परमेश्वर ने मिस्र की सेना को उसी समुद्र में डूबा दिया। उसने अपने लोगों के लिए बचाव का एक रास्ता खोला। परमेश्वर न केवल अपनी शक्ति दिखाने के लिए बल्कि अपने लोगों के लिए उनके प्यार को दिखाने के लिए समुद्र को विभाजित करके इस चमत्कार को किया। **(14: 21,22)** 5. इस्राएलियों ने यहोवा का भय माना और उस दिन परमेश्वर और मूसा पर भरोसा किया। **(14: 31)** **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	कई वर्षों के गलामी, परमेश्वर से मोक्ष के लिए दोहाई, कई विपत्तियों और फिरौन के परमेश्वर को सुनने से इनकार करने के बाद, अन्त में इस्राएलियों को मुक्त किया गया। बच्चों से चर्चा करें कि वे मिस्र छोड़ते समय कैसा महसूस कर रहे होंगे।	पाठ की समीक्षा करने के लिए आज के अध्ययन पर छात्रों को प्रश्नोत्तरी दे।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या हम अपने पाप से मुक्त करने के लिए भगतान की गई महान कीमत का एहसास करते हैं? क्या हम समझते है की यीशु ने इस कीमत का भुगतान किया और क्रूस पर मरकर हमें छुड़ाया? 2. क्या हमारे पाप को अपने ऊपर लेने और परमेश्वर के साथ सही रिश्ता बनाना संभव करने के लिए हम प्रभु का आभारी हैं? हमें बस इतना करना है कि उन पर भरोसा करें और अनन्त जीवन के दान को स्वीकार करें।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. जब चीजें हमारे इच्छानुसार या हमारे उम्मीद के अनुसार नहीं होते, हम कैसे प्रतिक्रिया करते हैं? क्या हम परमेश्वर को दोष देते हैं और उससे नाराज हो जाते हैं? या क्या हम आत्मविश्वास से इन समस्याओं का सामना करेंगे? शायद चीज़े हमारे उम्मीद के अनसार नहीं होंगे फिर भी अगर हम परमेश्वर पर भरोसा करे तो वे हमारी मदद करेंगे। 2. इस अध्ययन से विचार करें कि परमेश्वर असंभव को संभव करता है।

	B10 – लेवल 3 कहानी 2- मूसा लाल समुद्र।	B10 – लेवल 4 कहानी 2- मूसा सीनै पर्वत के ऊपर।
	बाइबल अनुभाग: निर्गमन 13: 20-22,14: 5-15,19-31 ***मुख्य पद : निर्गमन 14: 14*** **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों को मिस्र से बचाया। 2. इस्राएलियों ने उनके लिए परमेश्वर की देखभाल पर संदेह करना शुरू किया। 3. परमेश्वर मार्गदर्शन और रक्षा के लिए उनके साथ थे।	***बाइबल अनुभाग: निर्गमन 19: 1-13, 16-25, 20: 1-21*** ***मुख्य पद : निर्गमन 19: 5 - 20: 20*** **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर पवित्र और शक्तिशाली है। 2. हमे आसानी से परमेश्वर से संपर्क करने का विशेषाधिकार है, जो इस्राएलियों को नहीं था। 3. परमेश्वर ने इस्राएलियों को जीने के तरीकों के बारें में निर्देश दिया।
पहचान कराने	इस बात पर विचार करें कि 430 साल मिस्र में गुलामी इस्राएलियों कैसे महसूस कर रहे थे। बच्चों से पूछें कि इस्राएलियों इस समय सोच रहे होंगे।	रोजमर्रा की स्थितियों के बारे में सोचें जब हमारे पास नियम और दिशानिर्देश होते हैं। ये दिशानिर्देश आमतौर पर हमारी मदद करने के लिए होते हैं। यह इस्राएलियों के लिए परमेश्वर से प्राप्त दस आज्ञाओं के समान था। वे उनके भलाई के लिए और उनके जीवन में उन्हें मार्गदर्शन देने के लिए था।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. आखिर में इस्राएलियाँ मुक्त थे और मिस्र से दूर परमेश्वर द्वारा प्रतिश्रत देश के रास्ते जा रहे थे। यह सोचिए कि गुलामी से मुक्त होने पर वे कितने उत्साहित थे। । 2. परमेश्वर ने इस्राएलियों को मुक्त करके दिन में मेघ के खंभे में और रात के समय आग का खंभे में होकर उनको मार्गदर्शन दिया। **(13; 21,22)** यह दिखाते है कि बे हमेशा मार्गदर्शन देकर उनकी मदद कर रहा था। **(13: 21, 22)** कभी-कभी लोग इस तरह के चिन्ह या अद्भुत काम देखने चाहते हैं ताकि वे जान सकें कि परमेश्वर उनके साथ है। लेकिन अगर हम उस पर भरोसा करें तो वे बाइबल और पवित्र आत्मा के माध्यम से हमें मार्गदर्शन कर सकते है। 3. जब फिरौन की सेना उन्हें वापस लाने के लिए उनके पीछा किया तब इस्राएलियों घबराहने लगा और गुस्सा होकर परमेश्वर को दोष देना शुरू किया। वे परमेश्वर पर भरोसा करना छोड़ दिया। वे इस बातं को बिलकुल भूल गए की परमेश्वर ने इतने दूर उन्हें लाने के लिए कितने बड़े बड़े काम किए थे। 4. लेकिन मूसा इस परिस्थिति में भी शांत और सकारात्मक बने रहे, और लोगों को याद दिलाया की परमेश्वर उनके लिए लड़ेंगे। **(14: 14)** 5. परमेश्वर ने लाल समद्र को विभाजित करके इस्राएलियों को लाल समद्र के बीच से बच निकाला और फिर मिस्र की सेना को उसी समद्र में डूबा कर वे अपने शक्ति का प्रदर्शन किया। **(14: 21,22,26-28)** 6. इस्राएलियों ने यहोवा का भय माना और उस दिन परमेश्वर और मूसा पर भरोसा किया। **(14: 31)** **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. प्परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाने के बाद अब दो महीने हो चुके थे। वह अब उन्हें आने वाले कार्यों के लिए तैयार कर रहे थे। 2. परमेश्वर लोगों को यह बताने के लिए कहते हैं कि वे अपने चुने हुए लोग कैसे हैं और वे अपने नीज धन कैसे होंगे। **(19: 5, 6)** वह उन्हें खुद को पवित्र करने के लिए कहता है। पवित्र बनने का मतलब समझाओ - अलग रकना, शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर को मिलने के लिए तैयार करना। 3. इस्राएलियों पहाड़ को छू भी नहीं सकते थे, क्योंकि यह पवित्र था। परमेश्वर की शक्ति और पवित्रता इतना मजबूत थी कि लोग उसके पास आ नहीं सके। **(19: 10-13)** इस बात पर विचार करें कि यह कितना आश्चर्यजनक है की प्रभु यीशु के कर्मों के कारण अब हम इस पवित्र, शक्तिशाली परमेश्वर से आजादी के साथ संपर्क कर सकते हैं। 4. परमेश्वर केवल मूसा को उससे संपर्क करने की अनुमति देता है और उसे दस आज्ञा देता है। **(20: 1-17)** यह आज्ञाएं मसीही को परमेश्वर के प्रति और एक दूसरे के लिए अपनी जिम्मेदारियों के बारे में बताते हैं। इसे इस्राएलियों को एक व्यावहारिक पवित्रता के जीवन की ओर बढ़ाने, उन्हें परमेश्वर की प्रकृति को दिखाने और उनके जीवन जीने की एक योजना के रूप में दिए गए थे। 5. लोग खुद पहाड़ पर जाने के लिए डरते और अनिच्छुक थे। इसलिए मूसा उनके और परमेश्वर के बीच बिचवई के रूप में कार्य किया। मूसा से अधिक महान, यीशु, परमेश्वर और मानव जाति के बीच एकमात्र बिचवई है। **(1तीमुथियुस 2: 5)** 6. मूसा उन्हें निडर होने के लिए कहते है। उनका डर आतंक था। मूसा इसे भगवान के भय से प्रतिस्थापित करना चाहते थे जो विश्वास और आज्ञाकारिता लाता है और उन्हें पाप करने से रोकना चाहता है। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	इस्राएलियों को मार्गदर्शन करते परमेश्वर, उनके पीछे करते हुआ मिस्री, और इस्राएलियों का बच निकलने की एक चित्र बनाएँ।	बच्चों को दस आज्ञाओं की एक सूची बनाने के लिए सबक की समीक्षा करें। हमारे दैनिक जीवन में आज्ञाओं का पालन कैसे किया जा सकता है?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** जब हमारे जीवन में बुरी चीजें होती हैंक्या हम परमेश्वर को दोष देते हैं और कहते हैं कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वे हमारे पास नहीं है या हमारी मदद करने के लिए तैयार नहीं है? या हम मूसा की तरह मानेंगे कि उसने अब तक हमारी मदद की है और अगर हम उस पर भरोसा करते है तो वे हमारी मदद करते रहेंगे और हमारे लिए लड़ेंगे?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** अगर हम मानते हैं कि इस्राएलियों कितने डरे हुए और परमेश्वर के पास जाने के लिए कितने अयोग्य थे। क्या हम वास्तव में यह यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के पास स्वतंत्र रूप से जाने की इस विशेषाधिकार को समझते हैं? हमारे पाप को अपने ऊपर लेकर हमें पवित्र बनाने के लिए हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए।

	B10 – लेवल 3 कहानी 3- मूसा कठिन यात्रा।	B10 – लेवल 4 कहानी 3- मूसा आग से बाहर।
	बाइबल अनुभाग: निर्गमन 17: 1-16 ***मुख्य पद : 1 पतरस 5: 7*** **हम सीख रहे की :** 1. इस्राएलियों परमेश्वर पर संदेह करना जारी रखते हैं। 2. परमेश्वर उन्हें कभी नहीं छोड़ते और उनके सभी जरूरतों के लिए प्रदान करने और उनके पक्ष में लड़ना जारी रखता है।	***बाइबल अनुभाग: निर्गमन 32: 1-35*** ***मुख्य पद :निर्गमन 32: 26 - 33*** **हम सीख रहे की :** 1. जल्द ही इस्राएलियों परमेश्वर के आज्ञाएं भूल गए। 2. जो लोग परमेश्वर के आज्ञा का पालन किया उन पर परमेश्वर ने दया दिखायी और जिन लोगों ने आज्ञा की अवज्ञा की उन्हें दंडित किया।
पहचान कराने	आलोचना करे कि इस्राएलियाँ कितने दूर तक पहुंचे हैं और परमेश्वर ने उनके लिए कैसे सब कुछ प्रदान किया है; मिस्र में हुई विपत्तियाँ, लाल समुद्र के विभाजन। बच्चों से इस बारे में सोचने के लिए कहें कि इस्राएलियों को इस समय परमेश्वर के प्रति कैसा महसूस होना चाहिए था।	बच्चों से एक ऐसे समय के बारे में सोचने के लिए कहें जब उन्हें पता था कि वे कुछ गलत काम कर रहे थे। सोचिए कि हम अक्सर ऐसी परिस्थितियों में हां क्यों कहते हैं। इस कहानी में, हम सीखते हैं कि हमें हारून की तरह नहीं लेकिन मूसा की तरह होकर परमेश्वर के रास्ते में चलना चाहिए।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. प्रभु के आदेश मिलने के बाद, इस्राएली फिर से आगे बढ़ रहे थे। लेकिन यात्रा के दौरान पानी मिलने के लिए कोई भी जगह नहीं था। इसलिए वे फिर से शिकायत करना शुरू किया। **(17: 2,3)** परमेश्वर से प्रार्थना करके उस पर भरोसा करने के बजाय उन्होंने मूसा से वाद विवाद करना शुरू किया। 2. उन पर गुस्सा होने के बजाय परमेश्वर दयालता से कार्य करता है, और उन्हें एक चट्टान से पानी देता है - तब भी वे उन्हें नहीं छोड़ता और एक चमत्कार करता है। **(17:5, 6)** 3. उनकी समस्याएं खत्म नहीं हुई हैं क्योंकि अमालेकी उन पर हमला करते हैं। **(17: 8)** इस समूह को बुरे, खतरनाक लोगों के रूप में जाना जाता था जो सिर्फ मज़े के लिए लोगों को मारते थे। कल्पना कीजिए कि मिस्र और वहां के सभी समस्याओं को छोड़ निकलने के बाद अब इस अमालेकी द्वारा मारें जाने पर इस्राएली कैसे महसूस कर रहे होंगे! 4. लेकिन परमेश्वर ने उनकी मदद की। मूसा एक पहाड़ी के चोटी पर खड़े होते हैं और अपने सिर के ऊपर अपने लाठी पकड़ रखा। जब तक उसके हाथ सिर से ऊपर था, वे जीत रहे थे, लेकिन जब यह उसके सिर से नीचे करता, तो वे हारने लगे ! जल्द ही मूसा का हाथ थकने लगे और हारून और हूर उनके हाथों को सर के ऊपर रखने में उसका मदद किया। **(17: 11-13)** 5. इस्राएलियों ने उस दिन युद्ध जीता - स्पष्ट रूप से परमेश्वर उनके साथ उनके दुश्मन को हराने में मदद कर रहे थे। इससे यह भी पता चला कि परमेश्वर मूसा के द्वारा इस्राएलियों को आगे ले जाएंगे। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. सीनै पर्वत से मूसा के वापस आने की इन्तज़ार करके इस्राएली बेचैन होने लगे। उन्होंने मामलों को अपने हाथों में लिया और अपना खुद का भगवान बनाना चाहा। उन्होंने प्रभ के नेतृत्व को एक कृत्रिम मूर्ति के साथ बदल दिया जिसे वे नियंत्रित कर सकते हैं। इस बारे में सोचें कि यह कैसे पहले दो आज्ञाओं का उल्लंघन करना था। **(32: 1-4)** 2. उनके अवज्ञा को देखकर परमेश्वर पूरे देश को नष्ट करने के लिए तैयार था। **(32: 10)** लेकिन मूसा ने परमेश्वर से अनरोध किया और परमेश्वर ने यहाँ दया दिखाया। **(32: 11-14)** दया की परिभाषा की व्याख्या करें - हम जिस सजा के लायक हैं उससे क्षमा किए जाना। 3. मूसा पहाड़ से वापस नीचे आया। और लोगों से इतना गुस्से में था कि उनके सामने उन्होंने दस आज्ञाओं के तख्तियां तोड़ दिया। यह दिखाने के लिए कि उन्होंने परमेश्वर के कानून को तोड़ दिया था। **(32: 19)** फिर भी परमेश्वर लोगों से क्रुद्ध था। 4. इस्राएलियों को गमराह करने की नेतृत्व करने के लिए मूसा हारून से निराश था। उसे पता होना चाहिए था कि इस्राएलियों जो कर रहे थे वह गलत है लेकिन इसके बजाय उन्होंने उनकी शिकायतों को सुनकर पूजा करने के लिए सोने का बछड़े को बनाने में उनकी मदद किया। **(32: 21, 22)** 5. मूसा ने इस्राएलियों से पूछा 'यहोवा की ओर कौन है?' जिसने भी अनुकूल प्रतिक्रिया न दिया और परमेश्वर का अनुसरण नहीं किया उसे मारा गया। **(32: 26-29)** परमेश्वर के प्रति निष्ठा अन्य सभी निष्ठा से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	मुख्य पद सीखें और चर्चा करें कि वे इसे अपने जीवन में कैसे प्रयोग कर सकते हैं।	**1 यूहन्ना 5:21** को पढ़िए और इस बारे में सोचिए कि किस तरह की मूर्तियां हमारे दिल में परमेश्वर की जगह ले सकती हैं। इस पद के आधार पर परमेश्वर का आज्ञा पालन करके अनुगमन करने के महत्व पर प्रकाश डालने के लिए इन मूर्तियों का एक दीवार पोस्टर बनाएं।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या हम कभी-कभी भूल जाते हैं कि परमेश्वर मुश्किल परिस्थितियों में हमारी मदद कर सकते हैं? हमारी लड़ाई लड़ने और हमारी सभी मुश्किल परिस्थितियों में हमारी मदद करने के लिए हमें उनसे मदद माँगनी चाहिए। 2. इस बारे में सोचें कि कैसे हारून और हूर ने मूसों को सिर से ऊपर हाथ रखने में मदद की और कैसे उन्होंने उन्हें प्रोत्साहित किया और उनको सहारा दिया। आज हम दूसरों की मदद कैसे कर सकते हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. अक्सर हम परमेश्वर के आज्ञाओं का उल्लंघन करके गलतियां कर सकते हैं। लेकिन हम परमेश्वर से सिर्फ पूछकर क्षमा प्राप्त कर सकते हैं। 2. हारून सच्चाई के लिए खड़ा नहीं हुआ। हमारे जीवन में ऐसे एक समय के बारे में सोचिए जब हम सच्चाई के खिलाफ खडे न होके अधिकांश लोगों की गलतियों का अनकरण किया है। प्रार्थना करें ताकि परमेश्वर की आज्ञा मानने और परीक्षा में न पड़ने में वे हमारी मदद करे।

	B10 – लेवल 3 कहानी 4- मूसा पीतल का सर्प।	B10 – लेवल 4 कहानी 4- मूसा मरूभूमि में।
	बाइबल अनुभाग: गिनती 21: 4-9, यूहन्ना 3: 1-2 - 14-16 ***मुख्य पद : यूहन्ना 3:14*** **हम सीख रहे की :** 1. इस्राएली ने फिर से परमेश्वर से शिकायत की। 2. परमेश्वर को उन्हें दंडित करना पड़ा - लेकिन उन्होंने उनके लिए अपनी सजा से बचने का एक तरीका भी बनाया। 3. यह भविष्य की घटनाओं की एक तस्वीर है जब यीशु हमारे पापों के लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था।	***बाइबल अनुभाग: गिनती 21: 1-9*** ***मुख्य पद : यूहन्ना 3: 14 ; 15*** **हम सीख रहे की :** 1. इस्राएलियों जल्द ही परमेश्वर की देखभाल और प्रावधान के बारें में भूल गए। 2. परमेश्वर चाहता था कि इस्राएलियों को यह एहसास हो कि वे कैसे पाप कर रहे थे और उन पर भरोसा नहीं कर रहे थे। 3. परमेश्वर ने उनको सजा से बचने का एक तरीका प्रदान किया।
पहचान कराने	बच्चों को ऐसे एक समय के बारे में सोचने के लिए कहें जब वे किसी चीज़ के इंतजार में या किसी से उन्हें मिले वादा को पूरा होने के लिए बेचैन थे।समझाओ कि परमेश्वर ने पहले ही इस्राएलियों को प्रतिश्रुत देश वादा किया था। लेकिन वे वहां पहुंचने के लिए बेचैन था।	एक लंबी यात्रा के सफर पर जाने के बारे में सोचिए। अक्सर लोग यात्रा के दौरान उतावला होते हैं और खासकर बच्चों के साथ यात्रा करने से और थकते हैं। कभी-कभी, कैसे भी वे लक्ष्य स्थान पहुंचना चाहते हैं। परमेश्वर द्वारा प्रतिश्रुत देश तक पहुंचने के बारे में इस्राएलियों ने भी ऐसा महसूस किया होगा।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. इस्राएलियों लगभग 40 वर्षों तक मरुभूमि में थे और हताश हो रहे थे। उन्होंने फिर परमेस्वर से शिकायत करना शुरू किया- 'तुम लोग हम को मिस्र से जंगल में मरने के लिए क्यों ले आए हो?' **(गिनती 21: 4)** 2. परमेश्वर उन के अविश्वास से क्रुद्ध होकर उनके भींच जहरीला सांप भेजते है और कई लोग मर जाते हैं। लेकिन मूसा क्षमा के लिए लोगों की तरफ से परमेश्वर से अनुरोध करता है। **(21:7)** 3. परमेश्वर ने मूसा से एक पीतल का सांप बनाकर खम्बे में लट काने के लिए कहा। और जो भी इस सांप को देखा वह जीवित बच गया। पीतल का साँप इस्राएलियों का जीवित रहने का एक उपाय बना। इसे देखते समय इस्राएलियों यह स्वीकार कर रहे थे की यह दण्ड परमेश्वर ने दिया था और केवल परमेश्वर ही उन्हें इससे बचा सकता है। **(21: 9)** 4. इस्राएलियों को अभी तक इसके बारे में कोई जानकारी नहीं था लेकिन खम्बे पर इस सांप का एक बड़ा अर्थ था। यूहन्ना 3 में यीशु बताते हैं कि जैसे सांप को देखने पर इस्राएलियों को चंगा मिला उसी तरह हम क्रूस पर यीशु की मृत्यु को देखकर आज भी हमारे पाप से मुक्ति पा सकते हैं। इस्राएलियों का जीवन साँप के कारण नहीं बल्कि उनके विश्वास के कारण बचा। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. इस्राएलियों लगभग 40 वर्षों तक मरुभूमि में थे और हताश हो रहे थे। परमेश्वर ने उन्हें प्रतिश्रुत देश वादा किया था लेकिन यह अभी तक कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। परमेश्वर से प्रार्थना करके उस पर भरोसा करने की बजाय और और यह भी भूल के कि परमेश्वर उन्हें कितना दूर लाया था, उन्होंने मूसा से वाद विवाद करना शुरू किया। **(गिनती 21: 4-6)** 2. इससे पहले, वे कई खतरे की स्थितियों में थे लेकिन उनके अविश्वास और लगातार शिकायत के बावजूद परमेश्वर ने सारा प्रबन्ध किया और उनके साथ नहीं छोड़ा। 3. लेकिन क्रोधित हुए और उनके बीच जहरीले सांप भेजे, साँप की डसने से कई लोगों की मृत्यु हो गई। **(21: 6)** 4. लोगों को जल्द ही अपने पाप का महसूस हुआ और उनके तरफ से परमेश्वर से माफी मांगने के लिए मूसा से बिनती किया। **(21: 7)** 5. परमेश्वर ने मूसा से एक पीतल का सांप बनाकर खम्बे में लट काने के लिए कहा। और जो भी इस सांप को देखा वह जीवित बच गया। इसे देखते समय इस्राएलियों यह स्वीकार कर रहे थे की यह दण्ड परमेश्वर ने दिया था और केवल परमेश्वर ही उन्हें इससे बचा सकता है। **(21: 9)** 6. इस्राएलियों को इसका एहसास नहीं था लेकिन यह क्रूस पर यीशु का प्रतीक था। जो सांप को देखते थे वे अपने दर्द से मुक्त होकर मरने से बच गए। वैसे ही, जो क्रूस पर यीशु की ओर देखते हैं और उस पर भरोसा करते है वह मृत्यु से बचकर अनंत जीवन प्राप्त करते है। (मुख्य पद देखे) **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	बच्चों से **यूहन्ना 3: 16** अच्छी तरह से पढ़कर अनन्त जीवन के अर्थ पर विचार करने के लिए के लिए कहें। कई लोग अनन्त जीवन के विचार को पसंद नहीं करते हैं क्योंकि वे अपने इस जीवन से सन्तुष्ट नहीं हैं। लेकिन जो अनन्त जीवन यीशु देता है उस में कोई बीमारी, मृत्यु, बुराई या पाप नहीं होंगे ! परमेश्वर को जान कर उसका अनुसरण करने पर लौकिक जीवन पर हमारे दृष्टिकोण बदल जाता है।	**भजन संहिता 78: 10-38** पढ़ें और परमेश्वर ने किए उन सभी आश्चर्य कर्म और इनके प्रति इस्राएलियों के मनोभाव का एक सूची बनाएं।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** इस्राएलियों ने परमेश्वर से शिकायत की क्योंकि वे उस पर भरोसा नहीं कर रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के आदेशों का पालन नहीं किया और वह परमेश्वर ने उनके लिए किए सभी कर्मों को भूल गए। इस बात पर विचार करें कि अक्सर हम शिकायत इसलिए करते है क्योंकि हम चीजों को हमारी दृष्टिकोण से देखते हैं। हमें अपनी शिकायत करने की आदत से निपटकर इसे हमारे जीवन में पकड़ रकने से रोकना चाहिए।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** भले ही परमेश्वर उन्हें कभी छोड़ा नहीं था, फिर भी इस्राएलियों ने अपनी वर्तमान स्थिति के बारे में शिकायत की थी। अक्सर, हम इस तरह होते हैं और परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए सभी आशीर्वादों और देखभाल को भूल कर उस पर भरोसा करना छोड़ देता है। अक्सर हमें अपने जीवन में जहरीले सांप से निपटना पड़ता है ताकि हम परमेश्वर को देख सकें और उस पर भरोसा कर सकें।

	B11 – लेवल 3 कहानी 1- मूसा परमेश्वर से भेंट।	B11 – लेवल 4 कहानी 1- आज्ञा/व्यवस्था एक ही परमेश्वर।
	बाइबल अनुभाग: निर्गमन 19: 1-14 ***मुख्य पद : 1 पतरस 1: 16*** **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर पवित्र और धर्मी है 2. परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में आज्ञाकारिता बहुत महत्वपूर्ण है। 3. परमेश्वर के कानून लोगों की पाप का पर्दाफाश करते हैं।	***बाइबल अनभाग: निर्गमन 19: 16-25, 20: 1-7, मत्ती 22: 34-40*** ***मुख्य पद : मत्ती 22:37*** **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर पवित्र है। 2. परमेश्वर शक्तिशाली है। 3. परमेश्वर जलन रखने वाला है। 4. परमेश्वर प्रेममय है।
पहचान कराने	बच्चों से यह सोचने के लिए कहें कि वे एक शादी से जाने से पहले क्या करेंगे? स्नान करके यह सुनिश्चित करना कि वे बड़े दिन के लिए साफ और अच्छी तरह से तैयार हैं। समझाओ कि इस्राएलियों को परमेश्वर से मिलने के लिए कैसे तैयार होना था। क्योंकि वह धर्मी और पवित्र था और इस्राएलियों अधर्मी थे।	इस अध्ययन में हम इस बात पर विचार करेंगे कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएलियों को अन्य देवताओं या मूर्तियों को न बनाने की आदेश दिया था। अगर हमारे और भगवान के बीच कुछ भी आता है, तो यह एक मूर्ति है। आज के समाज में मूर्तियों या देवताओं के उदाहरणों के बारे में सोचें। और बच्चों के साथ चर्चा करें कि वे परमेश्वर की जगह कैसे ले सकते हैं।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. परमेश्वर शक्तिशाली और पवित्र है इसलिए इस्राएलियों उसके पास नहीं जा सकते केवल मूसा परमेश्वर से मिलने के लिए पहाड़ पर जा सकते थे। 2. इस्राएलियों को मिस्र में गुलामी से बचाने का वजह अब परमेश्वर उन्हें बताता है। परमेश्वर इस्राएल को एक चुना हुआ राष्ट्र और पवित्र जाती बनाना चाहता था इस लिए वह चाहता था की वे उनके आदेशों का पालन करें और उसका अनुसरण करें। **(पद 5,6)** 3. परमेश्वर के आदेश सुनकर लोगों ने यह प्रतिक्रिया दिया कि वे सबकुछ करेंगे जो परमेश्वर ने कहा। **(पद 8)** 4. परमेश्वर ने मूसा को आदेश दिया की आराधना के लिए इस्राएलियों को पवित्र करे **(पद 10)** यह उनको परमेश्वर से मिलने की तैयार थी। परमेश्वर से मिलने के लिए उन्हें अपने दिल और मन धोना और तैयार करना था। बच्चों को समझाएं कि शारीरिक रूप से साफ़ होना उन्हें परमेश्वर की आराधना करने में कैसे उपकारी हो सकते है। 5. मुख्य पद को पढ़े और देखे कि उन्हें परमेश्वर से मिलने के लिए तैयार क्यों किया गया था। **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. इस्राएलियों को सीनै पर्वत पर लाया गया था। और परमेश्वर से मिलने के लिए उन्हें तैयार किए जा रहे थे। परमेश्वर इतना पवित्र था कि उन्हें खुद को बाह्य रूप से शुद्ध करने पड़ी। **(19:14)** 2. परमेश्वर आग में होकर स्वर्ग से उतरे - इस्राएलियों ने उनके शक्ति देखकर काँप ऊठे। **(19: 16-18)** 3. परमेश्वर ने लोगों से कहा कि उन्हें छोड़के उनके पास कोई अन्य देवता नहीं होना चाहिए। **(20:3)** उन्होंने उन्हें अन्य देवताओं या मूर्तियों की पूजा न करने के लिए भी मना किया। वह हमारे प्यार के लिए एक जलन रखने वाला परमेश्वर है। और जो परमेश्वर के आदेशों का पालन करके उनसे प्यार करते है वे उन्हें बहुत करुणा दिखाते है। **(20: 5,6)** 4. जब परमेश्वर कहते हैं कि वह जलन रखने वाला है,यह मानव ईर्ष्या की तरह नहीं है जो पाप है। परमेश्वर की जलन हमेशा वास्तविक प्यार और चिंता व्यक्त करती है। 5. परमेश्वर का नाम विशेष है और इस्राएलियों को इसे व्यर्थ में लेने से मना किया गया था। जिस तरीके से हम प्रभु के नाम का उपयोग करते हैं, वह उसके प्रति हमारा दृष्टिकोण दिखाता है। बुरा बोलने या गाली-गलौज के लिए नहीं सिर्फ प्रशंसा और आराधना में ही उस पवित्र नाम का उपयोग हमे करना चाहिए। । 6. जब यीशु पृथ्वी पर था तो कानून के शासकों ने उसे धोखा देने की कोशिश की। बच्चों से **मत्ती 22: 34-40** पढ़ने को कहे। यीशु के अनुसार सबसे बड़ा आदेश क्या है ? **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	बच्चों के साथ विचार करें कि कैसे सीनै पर्वत एक पवित्र स्थान है। यहां परमेश्वर ने एक जलती हुई झाड़ी में से मूसा से बात की। **(निर्गमन 3: 1-12)** परमेश्वर ने एलिय्याह से भी धीमे शब्द में बात किया जब वह डरके मारे भाग रहा था। **(1 राजाओं 19: 1-13)**	मुख्य पद सीखो और चर्चा करें कि यह पद आज के अध्ययन का सारांश कैसे देती है। ऐसे प्रश्न पूछें जो उन्हें अध्ययन 1 पूरा करने में मदद करेंगे।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. परमेश्वर पवित्र और परिपूर्ण है और हम इतने पापी और मैले हैं कि हमें उसके पास आने के लिए एक रास्ते चाहिए। 2. इसलिए परमेश्वर अपने पुत्र यीशु को पृथ्वी पर हमारे लिए मरने के लिए भेजा था ताकि हम परमेश्वर के साथ एक नया रिश्ता बना सके। प्रभु यीशु में हमारे विश्वास की वजह से परमेश्वर हमें स्वच्छ और पवित्र रूप में देखता है।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. बच्चों से यह विचार करने के लिए कहें कि क्या ऐसा कुछ भी है जो उनके जीवन में परमेश्वर की स्थान लेता है या परमेश्वर से अधिक महत्वपूर्ण है? शायद उन्हें इसके महत्व पर पुनर्विचार करना चाहिए। 2. इस बात पर विचार करें कि क्या वे कभी-कभी परमेश्वर के नाम का दुरुपयोग करते हैं और कसम करने में इसका इस्तेमाल करते हैं? ऐसे करने से परमेश्वर को बहुत दुख होगा। बच्चों को ध्यान से सोचने के लिए चुनौती दें कि वे परमेश्वर का नाम का उपयोग कैसे करते हैं।

	B11 – लेवल 3 कहानी 2- मूसा परमेश्वर को जानना।	B11 – लेवल 4 कहानी 2- आज्ञा/व्यवस्था परमेश्वर का मार्ग।
	बाइबल अनुभाग: निर्गमन 20: 1-12 ***मुख्य पद : मत्ती 22: 37*** **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर एक ही है जो सच्चा है। 2. परमेश्वर का नाम विशिष्ट है और उसे सम्मान किया जाना चाहिए। 3. रविवार को आराम के एक विशेष दिन के रूप में रखा जाना चाहिए। 4. माता पिता का सम्मान करना महत्वपूर्ण है।	***बाइबल अनुभाग: निर्गमन 20: 6-11, लूका 13: 10-17*** ***मुख्य पद : निर्गमन 20: 8*** **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर चाहता है कि हम सब्त को पवित्र मानें। 2. कानूनों को करना हमें लोगों को प्यार नहीं करने से रोकना नहीं चाहिए।
पहचान कराने	रोजमर्रा की परिस्थितियों के बारे में सोचें जहां नियम होना अच्छी बात है। उदाहरण के लिए, खेलों में, घर पर, यातायात बत्ती, स्कूलों में आदि। बच्चों के साथ चर्चा करें कि कैसे इस्राएलियों को अपने पवित्र राष्ट्र बनाने के लिए परमेश्वर ने उन्हें दस व्यवस्था/आज्ञा दिया था। परमेश्वर के इच्छानुसार जीने के लिए उन्हें इन दिशानिर्देशों की आवश्यकता है।	
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. परमेश्वर का सबसे पहला था कि उनके अलावा कोई अन्य देवता या मूर्तियां न हों। **(पद 1-3)** और कुछ भी है जो परमेश्वर की स्थान हमारे जीवन में लेता है उसे मूर्ति बुलाते है। यह परमेश्वर के लिए बहुत महत्वपूर्ण था; इसलिए यह सबसे पहला वचन है। यीशु ने इसका खुद **मत्ती 4: 10** में पुष्टि की है। 2. दूसरा आज्ञा किसी अन्य मूर्तियों को नहीं बनाना का है। **(पद 4)** यह आसान लग सकता है लेकिन इस्राएलियों हाल ही में मिस्र से निकला था जहाँ कई मूर्तियों और देवताओं थे। इस आदेश के बारें में यीशु **लूका 16: 13** में जोर देता है। 3. तीसरा आज्ञा हमारे प्रभु परमेश्वर के नाम का दुरुपयोग नहीं करने का है। परमेश्वर का नाम विशेष है और इस्राएलियों को इसे व्यर्थ में लेने से मना किया गया था। जिस तरीके से हम प्रभु के नाम का उपयोग करते हैं, वह उसके प्रति हमारा दृष्टिकोण दिखाता है। बुरा बोलने या गाली-गलौज के लिए नहीं सिर्फ प्रशंसा और आराधना में ही उस पवित्र नाम का उपयोग हमे करना चाहिए। । 4. चौथा आज्ञा **(पद 8-11)** सप्ताह में अन्य छह दिनों से अलग सब्त को पवित्र दिन के रूप में स्मरण रखने का है। परमेश्वर ने छह दिनों में आकाश और पृथ्वी बनाई और फिर सब्त के दिन विश्राम किया और हमें उसके उदाहरण का पालन करना चाहिए। परमेश्वर चाहता है कि हम विश्राम का दिन लेकर उसकी और उसकी सृष्टि की आराधना करें। 5. पांचवां आज्ञा माता पिता का आदर करने का है। चर्चा करें कि आदर का क्या अर्थ है और हम अपने माता-पिता का सम्मान कैसे कर सकते हैं? **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. इस्त्राएलियों के दस आज्ञाओं में से एक था सब्त के दिन का पालन करना था। परमेश्वर चाहता था ही हम इसे पवित्र रखकर परमेश्वर को समर्पित करें। **(निर्गमन 20:8-11)** 2. परमेश्वर छह दिनों में आकाश और पृथ्वी कि सृष्टि की और सातवें दिन पर विश्राम किया। वह हमें भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करता है और चाहता है की एक दिन हम दूसरों से अलग रखे और उस दिन में आराम करके सर परमेश्वर और उसकी सृष्टि की आराधना करने के लिए समर्पित करें। 3. परमेश्वर ने इस्राएलियों को मन्ना इक्कट्ठा करने के लिए स्पष्ट निर्देशन दिया था। **(निर्गमन 16: 22-26)** 4. जब यीशु पृथ्वी पर था, परमेश्वर का इस आदेश को रखने के तरीके से लोग खुश नहीं थे। जब परमेश्वर ने सब्त के दिन लोगों को चंगा किया लोगों ने उन पर इस आदेश को तोड़ने का आरोप लगाया। यह कई अवसरों पर हुआ। एक ऐसा घट ना **लूका 13: 10-17** में पाया जाता है। 5. यीशु उनके पाखंड की ओर इशारा किया क्योंकि वे खुद रविवार को अपने जानवरों की देखभाल करते थे लेकिन यीशु इंसानों की परवाह करने में उन्हें दिक्कत थी। वे कानून में इतने फसे हुए और इतनी सख्ती से उसका पालन कर रहे थे कि वे वास्तव में परमेश्वर को उनके जीवन के लिए इच्छा के बारें में बिलकुल भूल रहे थे। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**मत्ती 22; 37-40** को पढ़ें और चर्चा करें कि ये पद दस आज्ञाओं को सारांशित कैसे करते हैं। बच्चों को पाठ 2 पूरा करने में मदद के लिए प्रश्न पूछें।	सब्त को पवित्र और दूसरों से अलग रखने के विषय पर चर्चा करें।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या हम हमारे जीवन में परमेश्वर के स्थान में अन्य देवताओं या मूर्तियों को डालते हैं? हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि अन्य चीजें परमेश्वर की जगह न लें। 2. क्या हम गलती से परमेश्वर के नाम की कसम खाता है या व्यर्थ इस्तेमाल करते हैं? हमें बड़ी सावधानी से परमेश्वर के नाम को विशेष और पवित्र मानना है। 3. क्या हम रविवार को दूसरों दिनों से विशेष मानते हैं? 4. क्या हम अपने माता पिता का आदर करते हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हम में से कोई भी सभी आज्ञाओं को नहीं रख सकता है। हम पापी हैं और हमारे खुद के बल पर परमेश्वर के मानदण्ड तक नहीं पहुंच सकते। (रोमियों 3:23) 2. हम इन आज्ञाओं का सिर्फ पालन करने की कोशिश करके परमेश्वर को खुश नहीं कर सकते। 3. यीशु मसीह आया ताकि वे हमारे पाप के लिए सजा सहन करे ताकि परमेश्वर के साथ हमारी रिश्ता सही हो सकें। अगर हम उसे हमारे जीवन में स्वीकार करते हैं तो वह हमें हमारी जिंदगी सही तरीके से जीने में मदद के लिए पवित्र आत्मा को देता है।

	B11 – लेवल 3 कहानी 3- मूसा परमेश्वर का आज्ञा पालन करना।	B11 – लेवल 4 कहानी 3- व्यवस्थाा पहले परमेश्वर।
	बाइबल अनुभाग: निर्गमन 20: 13-21; मत्ती 19: 16-30 ***मुख्य पद : मत्ती 19: 21*** **हम सीख रहे की :** 1. परमेश्वर ने इन आज्ञाओं को पालन करने के लिए किया। 2. इन आज्ञाओं का करने का मतलब यह नहीं है कि हम अनंत जीवन प्राप्त करेंगे। 3. कई भार हमारे जीवन में हम परमेश्वर के स्थान दूसरे चीज़ों को देते है।	***बाइबल अनुभाग: निर्गमन 20: 12-21, मरकुस 10: 17-31*** ***मुख्य पद : मत्ती : 6: 24*** **हम सीख रहे की :** 1. आज्ञाएं और कानून महत्वपूर्ण हैं और उनका पालन किया जाना चाहिए। 2. आज्ञाओं और कानूनों का सिर्फ पालन करना से हमें परमेश्वर के साथ एक रिश्ता या अनन्त जीवन प्राप्त नहीं होगा। 3. हम परमेश्वर की जगह अन्य मूर्तियों को आसानी से डाल सकते हैं।
पहचान कराने	इस बारे में सोचें कि हम स्कूल में नियमों का पालन करने की कोशिश कैसे करते हैं। लेकिन कभी-कभी हम उन्हें भूल जाते हैं और तोड़ते हैं। समझाओ कि ऐसा इसलिए है क्योंकि हम मनष्य है और पापी भी हैं और परमेश्वर की तरह पवित्र नहीं हो सकते हैं।	इस बारे में सोचें कि हम स्कूल में नियमों का पालन करने की कोशिश कैसे करते हैं। लेकिन कभी-कभी हम उन्हें भूल जाते हैं और तोड़ते हैं। समझाओ कि ऐसा इसलिए है क्योंकि हम मनष्य है और पापी भी हैं और परमेश्वर की तरह पवित्र नहीं हो सकते हैं। हमारे कर्मों से हम स्वर्ग में अपना रास्ता प्राप्त नहीं कर सकते।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. छठा आज्ञा खून न करने का है। खून करने के बारे में यीशु की नई व्याख्या को देखने के लिए **मत्ती 5: 21,22** पढ़े। इस बात पर विचार करें कि इस नई व्याख्या के आदार पर हम लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए। 2. सातवां आदेश व्यभिचार नहीं करने का है। 3. आठवां आदेश चोरी नहीं करने का है। नए नियम में, यीशु इसे फिर परिभाषित करके कहता है किया अगर कोई आपकी कुरता चुरा लेता है तो उसे दोहर भी ले जाने दो। 4. नौवां आदेश अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देने का है। बच्चों को समझाएं कि इसका मतलब है कि किसी और के किए के बारें में झूठ बोलना या पूरी कहानी का कई हिस्सों को छोड़कर कहना। इस मामले पर यीशु को क्या कहना है, यह देखने के लिए **मत्ती 12:36** को पढ़े। 5. दसवीं आज्ञा लालच न करने का है। लालच करना प्रदान करनेवाला परमेश्वर पर हमारे विश्वास की कमी को दर्शाता है। 6. बच्चों के साथ **मत्ती 19:16-30** पढ़े। चर्चा करें कि यीशु कैसे दिखाता है कि इन सभी आज्ञाओं का सिर्फ पालन करनें का मतलब यह नहीं है कि हमें अनंत जीवन प्राप्त होंगे। सिर्फ अच्छे कर्मों से उद्धार नहीं मिलता लेकिन परमेश्वर से प्यार और प्रभु यीशु पर भरोसा करके सब कुछ त्यागने की इच्छा होने की जरूरत है। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. जब यीशु पृथ्वी पर आया था, वह कानून की पूर्ति थी और कुछ आज्ञाओं में बड़ा परिवर्तन लाया। 2. पांचवां आदेश - आपके माता पिता का सम्मान करना है - **मत्ती 10: 37** हमें इस पर यीशु का नया दृश्य दिखाता है। 3. छठा आदेश - हत्या नहीं करना है। **मत्ती 5: 21,22** में हत्या की बारें में यीशु की व्याख्या को देखो। इस बात पर विचार करें कि आज हम लोगों के साथ कैसे व्यवहार करते हैं। 4. सातवां आदेश - व्यभिचार नहीं करना है। **मत्ती 5:40** में यीशु इसका भी व्याख्या करते है। 5. नौवां आदेश - नौवां आदेश अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देने का है। बच्चों को समझाएं कि इसका मतलब है कि किसी और के किए के बारें में झूठ बोलना या पूरी कहानी का कई हिस्सों को छोड़कर कहना। इस मामले पर यीशु को क्या कहना है, यह देखने के लिए **मत्ती 12:36** को पढ़े। **6. मरकुस 10: 17-31** पढ़ें। चर्चा करें कि यीशु कैसे दिखाता है कि सिर्फ अच्छे कर्मों से उद्धार नहीं मिलता लेकिन परमेश्वर से प्यार और प्रभु यीशु पर भरोसा करके सब कुछ त्यागने की इच्छा होने की जरूरत है। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	उन चीजों के बारे में चर्चा करें जो हमारे जीवन में परमेश्वर से अधिक महत्वपूर्ण हो सकती हैं और जो हमें पमेश्वर को पहले स्थान देने से रोकता है। व्यावहारिक तरीकों पर चर्चा करें जिससे हम परमेश्वर को अपने जीवन में पहले रखने के लिए अन्य चीजों को कैसे हटा सकते हैं।	जब यीशु पृथ्वी पर आया था, वह एक परिवर्तनवादी था। चर्चा करें कि यीशु की जन्म और मृत्यु ने व्यवस्था की आवश्यकता को कैसे बदल दिया होगा। उन्होंने सिखाया कि सिर्फ अच्छे कर्म करना और आज्ञा का पालन करना पर्याप्त नहीं था। यीशु अपना प्राण दिया ताकि हमें व्यवस्था/आज्ञा की आवश्यकता नहीं पड़े और हमें क्षमा किया जा सके।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या हम सोचते हैं कि हमारे माता-पिता, शिक्षकों, आदि के आज्ञा का पालन करने से परमेश्वर प्रसन्न होंगे और हमें अनन्त जीवन मिलेंगे? **इफ़िसियों 2: 8,9** 2. क्या हम भी धनी युवक के समान परमेश्वर के लिए चीजें छोड़ना नहीं चाहकर, उदास चले जाने की गलती करने चाहते है?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या हम धनी युवक की तरह यह सोचते हैं कि हम धार्मिक हैं और सभी आज्ञाओं को मानते हैं? आज्ञा का पालन अच्छा है लेकिन यह हमें परमेश्वर के साथ संबंध या अनन्त जीवन नहीं देंगें। 2. अनंत जीवन हमें हमारे अच्छे कर्मों से नहीं लेकिन यीशु पर हमारे विश्वास द्वारा प्राप्त होते हैं। प्रभु यीशु हमारे लिए परमेश्वर तक पहुंचने का एकमात्र मार्ग है।

	B11 – लेवल 3 कहानी 4- मूसा परमेश्वर को निराश करना।	B11 – लेवल 4 कहानी 4- व्यवस्था/आज्ञा परमेश्वर का वचन।
	बाइबल अनुभाग: निर्गमन 32: 1-26 ***मुख्य पद : निर्गमन 32: 26*** **हम सीख रहे की :** 1. इस्राएलियों परमेश्वर की अवज्ञा करना फिर से शुरू किया । 2. परमेश्वर ने उन लोगों पर दया दिखायी जो उनके आज्ञा का पालन किया और उनको दंडित किया जिन्होंने अवज्ञा किया।	***बाइबल अनुभाग: मरकुस 7: 1-23*** ***मुख्य पद : 1 तीमुथियुस 1: 15, रोमियों 5: 8*** **हम सीख रहे की :** 1. फरीसियों ढोंगी थे। 2. परंपरा को परमेश्वर के वचन से अधिक महत्वपूर्ण नहीं होना चाहिए। 3. यीशु ने अपने अनुयायियों को उनके दिल की शुद्धता पर चुनौती दिया।
पहचान कराने	बच्चों से एक समय के बारे में सोचने के लिए कहें जब उन्हें कुछ करने से मना किया गया था लेकिन उन्होंने आदेश न मान के वही किया है। समझाओ कि यहाँ भी वही हुआ है। और इस्राएलियों परमेश्वर को भूल गए और नकली देवताओं की पूजा करने फिर से शुरू किया।	हमारे परिवारों या आराधनालयों की परंपराओं के बारे में सोचिए, इनमें से कुछ अच्छे हो सकते हैं और कुछ बुरा। अच्छी परंपराएं परमेश्वर के वचन पर प्रकाश डालते हैं और हमें सेवा करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए प्रेरित करते हैं। लेकिन यह सब परमेश्वर के वचन से कभी भी अधिक महत्वपूर्ण नहीं होना चाहिए।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. सीनै पर्वत से मूसा के वापस आने की इन्तज़ार करके इस्राएली बेचैन होने लगे। उन्होंने मामलों को अपने हाथों में लिया और अपना खुद का भगवान बनाया। उन्होंने प्रभु के नेतृत्व को एक कृत्रिम मूर्ति के साथ बदल दिया जिसे वे नियंत्रित कर सकते हैं। वे पहले ही दो आज्ञाओं का उल्लंघन कर चुका था। **(निर्गमन 20: 1-5)** 2. उनके अवज्ञा को देखकर परमेश्वर पूरे देश को नष्ट करने के लिए तैयार था। **(32: 10)** लेकिन मूसा ने परमेश्वर से अनुरोध किया और परमेश्वर ने यहाँ दया दिखाया। दया की परिभाषा की व्याख्या करें - हम जिस सजा के लायक हैं उससे क्षमा किए जाना। 3. परमेश्वर ने उन लोगों पर दया दिखायी जो उनका आज्ञा का पालन करने के इच्छुक थे लेकिन दूसरों को उनके अवज्ञा के लिए मार दिए गए। 4. इस्राएलियों को गुमराह करने की नेतृत्व करने के लिए मूसा हारून से निराश था। उसे पता होना चाहिए था कि इस्राएलियों जो कर रहे थे वह गलत है लेकिन इसके बजाय उन्होंने उनकी शिकायतों को सुनकर पूजा करने के लिए सोने का बछड़े को बनाने में उनकी मदद किया। **(32: 22 - 24)** क्या हम भी कई बार गलत काम सिर्फ इसलिए करते है क्योंकि बाकी सब कर रहे है। **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. जब यीशु पृथ्वी पर था, उस समय मूसा द्वारा इस्राएलियों को दिए गए व्यवस्था / आज्ञा का पालन किए जा रहे थे। मगर परंपरा द्वारा हमारे रहन सहन के बारें में कई और कानून और नियम जोड़ा गया था जो परमेश्वर से नहीं था। 2. फरीसियों बहुत ही आलोचनावादी थे और इसलिए यीशु पर जांच करने आए थे। उन्होंने यीशु के शिष्यों की कर्मों के बारें में आलोचना किया और कहा कि वे परमेश्वर के कानून तोड़ रहे थे। 3. फरीसियों ढोंगी थे। उनके कर्म उनके दिल से नहीं सभी को दिखाने के लिए सिर्फ बाह्य थे क्योंकि उनके दिल परमेश्वर से बहुत दूर थे। वे गलत कारणों के लिए आराधना करते थे; क्योंकि वे पवित्र दिखना चाहते थे और अपनी सामाजिक स्थिति में बढ़ाव चाहते थे। 4. यीशु ने फरीसियों को अपने कानूनों का पालन करके परमेश्वर के कानून का पालन नहीं करने की आरोप लगाया। उदाहरणार्थ, माता पिता की देखभाल नहीं करना। परमेश्वर का सम्मान करने के बजाय पवित्र दिखाई देने के लिए कानूनों और परंपराओं को बनाए रखने के लिए परमेश्वर ने फरीसियों को दोष दिया। 5. यीशु ने शिष्यों को एक पवित्र दिल होने का महत्व सिखाया और उन्हें बताया की अगर हम शुद्ध दिल की तलाश नहीं करते हैं तो हमारे जीवन से कैसे दुष्टता और अधर्म के अभिलक्षण बाहर आ सकते है। **(मरकुस 13: 17-19)** **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	पाठ की समीक्षा करने और उन्हें पूरा करने में उनकी सहायता के लिए आज की कहानी पर बच्चों से प्रश्न पूछें।	बच्चों को **मरकुस 7: 21,22** पढ़के इसकी तुलना फिलिप्पियों 4:8 के साथ करने के लिए कहें। हमारे जीवन में कैसे अभिलक्षण होनी चाहिए? और हम इसे कैसे पा सकते है?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. जैसे परमेश्वर ने इस्राएलियों के पाप के बावजूद उन पर दया दिखायी, उसी तरह अगर हम गलत काम के लिए माफी मांगते हैं तो परमेश्वर हम पर भी दया दिखाएंगे। 2. परमेश्वर प्रेमपूर्ण है और हमें अपने पापों के लिए दंडित करना नहीं चाहता। इसी लिए उसने अपने पुत्र को हमारे लिए मरने भेजा ताकि हमें वह दंड न हो जिसका हम लायक हैं।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हमें अपने दिल और अपने उद्देश्यों की स्थिति को देखे बिना, लोगों का न्याय करने और उन पर आरोप लगाने में ज्ल्दबाज़ी नहीं दिखानी चाहिए। 2. फरीसियों की तरह, हमें अपने नियमों और परंपराओं में उलझा हुआ और जीने का एकमात्र तरीका की तरह नहीं देखना चाहिए। यह हमें परमेश्वर को सम्मान और प्यार करने से रोक सकता है। यदि हम किसी भी दुविधा में है, तो हमारे व्यवहार के बारे में मार्गदर्शन के लिए प्रभु यीशु को देखना चाहिए।

	B12 – लेवल 3 कहानी 1- क्रिसमस की ख़ुशी परमेश्वर के वादे।	B12 – लेवल 4 कहानी 1- क्रिसमस की खुशी एक पुत्र का जन्म।
	बाइबल अनुभाग: यशायाह 9: 1-7, मीका 5: 2 ***मुख्य पद : यशायाह 9: 6*** **हम सीख रहे की :** 1. यीशु के जन्म के सैकड़ों वर्ष के पहले ही इसकी भविष्यवाणी की गई थी। 2. बहुत से लोग यीशु के जन्म के लिए उम्मीद कर रहे थे। 3. यीशु लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा है, जो जगत की ज्योति है।	***बाइबल अनुभाग: लूका 1: 26-38; लूका 2: 1-7*** ***मुख्य पद : लूका 1: 35*** **हम सीख रहे की :** 1. यीशु की जन्म सैकड़ों साल पहले किए भविष्यवाणियों की पूर्ति थी। 2. मरियम और युसूफ दुनिया के लिए परमेश्वर की योजना में एक हिस्सा बनने के लिए इच्छुक थे। 3. बैतलहम के लोग यीशु का जन्म की खबर से लगभग अज्ञात थे।
पहचान कराने	बच्चों से पूछें कि क्या वे किसी गर्भवती के बारे में जानते हैं। बच्चों को बताएं कि माता-पिता के लिए बच्चे के आने से 9 महीने पहले कैसे होंगे। भविष्यद्वक्ताओं ने इस्राएलियों को यीशु आने के बारे में बताया था। लेकिन उन्हें इस जन्म के लिए सैकड़ों साल इंतजार करना पड़ा।	बच्चों के साथ चर्चा करें कि हम छुट्टियां,जन्मदिन पार्टियां, विवाह, दोस्तों से मिलने आदि के लिए योजना कैसे बनाते हैं। विचार करें कि जब हमारे योजनाएं गलत होती हैं या हमारी इच्छा के खिलाफ होता है तो हम कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। चर्चा करें कि मरियम के पास युसूफ से शादी करने की योजना थी लेकिन परमेश्वर को उन दोनों के लिए एक अलग योजना थी।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. छात्रों के साथ चर्चा करें कि एक फ़ुटबाल का खेल शुरू होने से पहले कैसे हम स्कोर के बारें में नहीं जानते। या हम यह नहीं जानते की 40 साल बाद हम क्या कर रहे होंगे। हम भविष्यवाणी नहीं कर सकते हैं। लेकिन यशायाह और मीका ने सैकड़ों साल पहले पृथ्वी पर यीशु के आने कि भविष्यवाणी की थी। 2. भविष्यद्वक्ता यशायाह वह उन लोगों के बारे में बोलता है जो अंधेरे में हैं और जो गहरे अँधेरे में भी चमकने वाले रोशनी देखेंगे। यह जानने के लिए की महान ज्योति कौन है बच्चों को **यूहन्ना 8: 12** देखने के लिए कहें। 3. बच्चों से **मत्ती 4: 14-16** पढ़कर यशायाह में की गई भविष्यवाणियों की सैकड़ों साल बाद पूर्तिकरण देखने के लिए कहे। 4. बच्चों के साथ चर्चा करें कि कैसे दुनिया की उद्धार के लिए परमेश्वर की महान योजना कितना अद्भुत था। इस योजना की पूर्तिकरण के लिए यहूदियों ने सैकड़ों वर्षों का इंतजार किया था। उनमें से कई लोगों का मौत परमेश्वर के जन्म से पहले ही हो गए थे । इस बात पर विचार करें कि यह कितना अद्भुत है कि हमारे पास बाइबल में यीशु के पूरे जीवन का एक खाता है, इसलिए हम खुद उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में जान सकते हैं। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. परमेश्वर ने जिब्रईल स्वर्गदूत को मरियम को यह बताने के लिए भेजा कि उसके एक बच्चा होगा। मरियम डर गई क्योंकि वह एक कुंवारी है और यह नहीं समझती कि यह कैसे होंगें। लेकिन स्वर्गदूत ने उसे आश्वस्त किया और उसे बताया कि उसे परमेश्वर के अनुग्रह मिला है। **(लूका 1: 26-34)** 2. मरियम शायद यह नहीं समझ पाई कि क्या हो रहा था लेकिन उसे पता था कि उसे सिर्फ परमेश्वर पर भरोसा करना था। **(1:38)** चर्चा करें कि हम उन समाचारों पर प्रतिक्रिया कैसे करेंगे जो पूरी तरह से हमारे जीवन को हमेशा के लिए बदल देंगे। 3. जब मरियम भारी गर्भवती थी तो औगुस्तस के आदेश के अनुसार मरियम और युसूफ को जनगणना के लिए नासरत से बैतलहम जाना पड़ा। चर्चा करें कि कैसे औगस्तस ने सोचा होगा कि वह नियंत्रण में था। लेकिन वास्तव में परमेश्वर पूर्ण नियंत्रण में था, और यह उनके योजना का हिस्सा था है कि प्रभु यीशु का जन्म बैतलहम में होना चाहिए। 4. मीका की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए यीशु का जन्म बैतलहम में हुआ था। **(मीका 5: 2)** गौर करें कि यीशु द्वारा इन भविष्यवाणियों को पूरा करना इतना महत्वपूर्ण क्यों था। 5. यीशु के पैदा होने पर मरियम उसे कपड़े में लपेटकर उसे एक चरनी में रखती है। **(2:7)** 6. चर्चा करें कि कैसे यहूदी अपने प्रतीक्षित राजा के शाही परिवेश में आने के लिए लंबे समय से इंतजार कर रहे थे, लेकिन यीशु का जन्म जानवरों के सात होता है। समझाओ कि हमें परमेश्वर को एक निश्चित तरीके से सीमित नहीं करना चाहिए। यह भी यीशु के लिए परमेश्वर की योजना का हिस्सा था। वह मरियम और युसूफ का मार्गदर्शन करके उन्हें आवश्यक सभी चीज़ों के साथ प्रदान कर रहा था। **1 कुरिन्थियों 8:9 पढ़े**। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**यशायाह 9: 6,7** पढ़ो और बच्चों के साथ यीशु का वर्णन करते हर एक शीर्षक के बारें में चर्चा करें जो यशायाह ने भविष्यवाणी की थी।	बच्चों से यह कल्पना करने के लिए कहें कि वे मरियम और युसूफ हैं। इस अध्ययन की घटनाओं के आधार पर उनसे मरियम और युसूफ के दृष्टिकोण से एक कहानी लिखने के लिए कहें।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. बच्चों को प्रकाश की विशेषताओं के बारे में सोचने के लिए कहें और कैसे यीशु को जगत का ज्योति कहा जाता है। **(यशायाह 9:2)** 2. बच्चों को जगत का ज्योति के रूप में यीशु को देखने के लिए चुनौती दीजिए। जब हम क्रिसमस के समय की दीप देखते हैं शायद वे हमें याद दिलाएंगे कि यीशु सच्चा प्रकाश है, जिसे हमारे पाप के दंड से बचाने के लिए पृथ्वी पर भेजा गया था।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. इस बात पर विचार करें कि क्या बच्चे अपने जीवन के लिए मरियम की तरह क्या हम परमेश्वर की योजनाओं को स्वीकार करते हैं, भले ही हम उन्हें पूरी तरह से समझ न सकें। 2. हम इस यीशु पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं जिसके लिए लोगों ने इतने लंबे समय तक इंतजार किया था? क्या क्रिसमस के समय हम उसे एक चरनी में एक बच्चे के रूप में देखते हैं? या क्या वे उद्धारकर्ता है जिस के लिए आप रोज़ाना जीना चाहते हैं?

	B12 – लेवल 3 कहानी 2- क्रिसमस की ख़ुशी मरियम के लिए आश्चर्य।	B12 – लेवल 4 कहानी 2- क्रिसमस की खुशी एक उद्धारकर्ता की घोषणा।
	बाइबल अनुभाग: लूका 1: 26-38 ***मुख्य पद : लूका 1: 32*** **हम सीख रहे की :** 1. यीशु के बारे में भविष्यवाणियां पूरी हुईं, यह दर्शाता हुए कि यह परमेश्वर की सार्वभौमिक योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। 2. हम भी मरियम और युसूफ की तरह हमारे जीवन के लिए अपनी योजना बना सकते हैं, लेकिन परमेश्वर की योजना ही हमेशा पूरी होगी।	***बाइबल अनुभाग: लूका 2: 8-20*** ***मुख्य पद : लूका 2: 11*** **हम सीख रहे की :** 1. य्स्वर्गदूत उद्धारकर्ता मसीह के आगमन के बारे में उत्साहित थे। 2. चरवाहा स्वर्गदूतों से खबर सुनने के बाद इस बच्चे यीशु से मिलने के लिए उत्साहित थे। 3. हमें भी यीशु का जन्म भी मनाने के लिए उत्साहित होना चाहिए।
पहचान कराने	बच्चों के साथ चर्चा करें कि हम छुट्टियां,जन्मदिन पार्टियां, विवाह, दोस्तों से मिलने आदि के लिए योजना कैसे बनाते हैं। विचार करें कि जब हमारे योजनाएं गलत होती हैं या हमारी इच्छा के खिलाफ होता है तो हम कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। चर्चा करें कि मरियम के पास युसूफ से शादी करने की योजना थी लेकिन परमेश्वर को उन दोनों के लिए एक अलग योजना थी।	इस बारे में सोचें कि एक बच्चे का जन्म सामान्य रूप से उनके माता-पिता द्वारा या निमंत्रण पत्र द्वारा कैसे घोषित किया जाता है। वह पल बहुत ही खुशी से भरा होता है। समझाओ कि यीशु कैसे एक सामान्य बच्चा नहीं था, इसलिए उसका जन्म का घोषणा भी सामान्य तरीके से नहीं किया जाएगा। याद रखें कि वह साधारण लोगों के पास आया था इसलिए चरवाहे ने उनके जन्म के बारे में सबसे पहले सुना।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. परमेश्वर ने जिब्रईल स्वर्गदूत को मरियम को यह बताने के लिए भेजा कि उसके एक बच्चा होगा भले ही वह एक कुवांरी है। **(पद 31)** 2. मरियम डर गई क्योंकि वह नहीं समझती कि यह कैसे होंगें। लेकिन स्वर्गदूत ने उसे आश्वस्त किया और उसे बताया कि उसे परमेश्वर के अनुग्रह मिला है। और परमेस्वर से कुछ भी असंभव नहीं है। **(पद 34-37)** बच्चों के साथ चर्चा करें इसका मतलब क्या है। 3. महत्वपूर्ण तथ्यों को इंगित करें कि मरियम गलील से थी और युसूफ दाऊद के वंशज थे। बच्चों के साथ चर्चा करें कि यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है; भविष्यवक्ताओं ने कहा कि यह आने वाला मसीहा गलील से आएगा **(यशायाह 9: 1)** और दाऊद के वंशज होंगे। **(यशायाह 9: 7)** ये तथ्य सभी भविष्यवाणियों को पूरा करने वाली एक बड़ी कार्य का हिस्सा था। 4. मरियम शायद यह नहीं समझ पाई कि क्या हो रहा था लेकिन उसे पता था कि उसे सिर्फ परमेश्वर पर भरोसा करना था। **(पद 38)** चर्चा करें कि हम उन समाचारों पर प्रतिक्रिया कैसे करेंगे जो पूरी तरह से हमारे जीवन को हमेशा के लिए बदल देंगे। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. जिस रात यीशु पैदा हुआ था चरवाहा अपनी भेड़ों का पहरा देते थे। बताएं कि आम तौर पर रात में भेड़ों का पहरा देना चरवाहों के लिए काफी शान्त और मन्द हुए होंगे। **(पद 8)** 2. लेकिन इस रात कुछ अद्भुत हुआ। एक स्वर्गदूत उन्हें दिखाई दिया और वे सभी डरे हुए थे। बच्चों से पूछें कि उनके साथ ऐसे कुछ होने से वे कैसा महसूस करेंगे। **(पद 9)** 3. स्वर्गदूत उन्हें यह बताने आया था कि उद्धारकर्ता-यीशु का जन्म हुआ था। **(पद 11)** 4. तब उस स्वर्गदूत के साथ और भी स्वर्गदूतों ने धरती पर प्रभु यीशु के आगमन का जश्न मनाते परमेश्वर की स्तुति करते प्रकट हुए। यह बताएं कि भेड़ों के साथ अंधेरे में चरवाहों के लिए यह दृष्टि कितनी शानदार हुए होंगे। **(पद 13, 14)** 5. जब स्वर्गदूत उनके पास से चले गए, चरवाहों ने से इस बच्चे को देखने के लिए जल्दी निकल पड़े। चर्चा करें की उस वक्त वे कैसे महसूस कर रहे थे; शायद उन्होंने सोचा कि यह सब उनकी कल्पना थी या फिर स्वर्गदूत ने गलत सन्देश दिया था। 6. उन्होंने बच्चे को उसी तरह पड़ा देखा जैसे स्वर्गदूत ने वर्णन किया था। **(पद 16)** उन्होंने परमेश्वर की प्रशंसा और महिमा की और हर किसी को पैदा हुए उद्धारकर्ता के बारे में बताने लगा। **(पद 17 - 20)** 7. इस बारे में सोचें की इस बच्चे को देखने के लिए चरवाहे कितने उत्साहित थे। उन्होंने तुरंत ही लोगों को उनके बारे में बताने लगे। और दूसरों के साथ सुसमाचार साझा करना चाहता था। **मख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	स्वर्गदूत जिब्रईल ने मख्य पद में दिया उन सभी वादे का एक सूची बनाएं। हम इस पद से आने वाले राजा और वह क्या करने आया है इसके बारे में क्या सीखते हैं। क्या हम वास्तव में विश्वास करते हैं कि ये वादे यीशु के बारे में हैं?	इस जन्म घोषणा की कल्पना करके इसकी एक तस्वीर बनाएं, मुख्य पद में जो स्वर्गदूत ने कहा उसे भी इस तस्वीर में शामिल करें।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या हम मरियम की तरह परमेश्वर की योजनाओं को स्वीकार करते हैं, भले ही हम उन्हें पूरी तरह से समझ न सकें। 2. हम इस यीशु पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं जिसके लिए लोगों ने इतने लंबे समय तक इंतजार किया था? 3. क्या भले ही हमारे जीवन में चीजें हमारी योजनाओं के अनुसार नहीं जाती हैं, फिर भी क्या हम परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए तैयार हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या हम यीशु के बारे में दूसरों को बताने के लिए चरवाहों की तरह उत्साहित हैं? क्या आप वास्तव में सोचते हैं कि उनका जन्म उतना ही अद्भुत है जितना उन्होंने सोचा था? 2. क्या हम सही कारणों के लिए क्रिसमस मनाते हैं? क्या हमारे लिए क्रिसमस सिर्फ उपहार और पार्टियां के बारे में है या क्या हम अपने उद्धारकर्ता के रूप में यीशु की आगमन को मानते है?

	B12 – लेवल 3 कहानी 3- क्रिसमस की ख़ुशी यीशु का जन्म।	B12 – लेवल 4 कहानी 3- क्रिसमस की खुशी एक महाराजा की आराधना।
	बाइबल अनुभाग: लूका 2: 1-7 *मुख्य पद : 2 कुरिन्थियों 8: 9* **हम सीख रहे की :** 1. बैतलहम के लोग यीशु का जन्म की खबर से लगभग अज्ञात थे। 2. यीशु, परमेश्वर का पुत्र वास्तव में मनुष्य था। 3. उनके जन्म सैकड़ों साल पहले लिखी भविष्यवाणियों को पूरा किया।	*बाइबल अनुभाग: मत्ती 2: 1-12* *मुख्य पद : मत्ती 2: 11* **हम सीख रहे की :** 1. जब यीशु पैदा हुआ, तो कुछ ने उनका स्वागत किया जबकि कई लोगों ने नहीं किया। 2. परमेश्वर यीशु, मरियम और यूसुफ की देखभाल कर के सुरक्षित रख रहे थे।
पहचान कराने	बच्चों के साथ चर्चा करें कि अगर राजा या रानी उनके शहर आ रहे थे तो क्या करेंगे। शायद बहुत उत्साहित होंगे या बहुत सारे उत्सव मनाएंगे। लेकिन जब यीशु का जन्म की खबर से लोग लगभग अज्ञात थे। सराय में उसके लिए एक कमरा भी नहीं था और उसका बिस्तर एक चरनी था।	बच्चों से यह सोचने के लिए कहें कि एक बच्चे के जन्म के अबसर में हम क्या करते हैं। विचार करें कि हम उन्हें उपहार कैसे खरीदते हैं, उन्हें मिलने जाते हैं, बच्चे को उठाते है। समझाओ कि यह खुशियों का एक समय है।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. मरियम और यूसुफ को जनगणना के लिए नासरत से बैतलहम जाना पड़ा। विचार करें की खासकर उन दिनों एक गर्भवती महिला के लिए यह लंबी यात्रा कितनी थकाऊ होगी। **(पद 1-4)** 2. यह जनगणना कैसर औगस्तस के आदेश पर हो रहा था। चर्चा करें कि कैसे औगस्तस ने सोचा होगा कि वह नियंत्रण में था। लेकिन वास्तव में परमेश्वर पूर्ण नियंत्रण में था, और यह उनके योजना का हिस्सा था। 3. जब वे वहां थे, यीशु एक घुड़साल में जानवरों के बीच पैदा हुआ था और उन्हें एक चरनी में रखा गया। **(पद 7)** 4. मीका की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए यीशु का जन्म बैतलहम में हुआ था। **(मीका 5: 2)** गौर करें कि यीशु द्वारा इन भविष्यवाणियों को पूरा करना इतना महत्वपूर्ण क्यों था। 5. चर्चा करें कि एक राजा के जन्म के लिए यह एक सामान्य दृश्य नहीं था, लेकिन यह प्रभु यीशु के लिए परमेश्वर की योजना का हिस्सा था। वह मरियम और युसूफ का मार्गदर्शन करके उन्हें आवश्यक सभी चीज़ों के साथ प्रदान कर रहा था। 6. चर्चा करें कि कैसे यहूदी अपने प्रतीक्षित राजा के शाही परिवेश में आने के लिए लंबे समय से इंतजार कर रहे थे, लेकिन यीशु का जन्म जानवरों के सात होता है। समझाओ कि हमें परमेश्वर को एक निश्चित तरीके से सीमित नहीं करना चाहिए। **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. यीशु के जन्म के समय हेरोदेस राजा था। 2. ज्योतिषियों ने पूर्व से यात्रा और तारा को देखा जिससे उन्हें यह पता चला कि एक नया राजा पैदा हुआ है। उन्होंने राजा हेरोदेस से पूछा कि यह राजा कौन था। **(पद 1, 2)** 3. राजा हेरोदेस इस खबर से परेशान था कि अब एक और राजा हो सकता है जो सिंहासन पर अपना स्थान ले सकता था। इसलिए क्योंकि वह जन्म से इस्राएल का वैध राजा नहीं था, जैसा कि प्रभु यीशु था। इसलिए हेरोदेस इस राजा के जन्म से शक्की था। **(पद 3)** 4. उसने ज्योतिषियों से कहा कि वह इस राजा को ढूंढें ताकि वह जाकर उसकी प्रणाम कर सके। लेकिन हेरोद वास्तव में बच्चे को मारने की योजना बना रहा था। **(पद 7,8)** 5. ज्योतिषियों ने तारे का पीछा किया और बच्चे को अपने घर में पाया। जब वे पहुंचे तो शायद वह एक या दो साल का था। जब उन्होंने उसे देखा तो वे बहुत खुश हुए और उन्हें प्रणाम किया। फिर वे उसे सोने, लोबान और गन्धरस का उपहार दिया। **(पद 10,11)** 6. परमेश्वर ने ज्योतिषियों से सपने में राजा हेरोदेस से बचने के लिए एक अलग रास्ते से घर जाने के लिए कहा था, क्योंकि वह यीशु को मारना चाहता था। उन्होंने परमेश्वर का आदेश का पालन करके यीशु की रक्षा के लिए अपना मार्ग बदल दिया। **(पद 12)** 7. यीशु के जन्म पर हेरोदेस और ज्योतिषियों के विपरीत प्रतिक्रिया पर चर्चा करे। ज्योतिषियों ने यीशु को दुनिया के उद्धारक, मसीहा के रूप में पहचाना, जबकि हेरोदस ने यीशु को अपने सिंहासन के लिए एक खतरे के रूप में देखा। **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	यीशु के जन्म की घोषणा करने के लिए स्थानीय बैतलहेम की समाचार पत्र के लिए एक लेख लिखें।	आज के अध्ययन पर पाठ की समीक्षा करने और अध्ययन 3 की मदद करने के लिए बच्चों से प्रश्न पूछें।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. जब यीशु पैदा हुए थे तब लोगों ने वास्तव में यीशु पर ध्यान नहीं दिया था क्योंकि वे उसके बारे में जानते नहीं थे। लेकिन अब हम उसके बारे में जानते हैं लेकिन क्या हम उन पर ध्यान देते हैं? क्या क्रिसमस के समय हम उसे एक चरनी में एक बच्चे के रूप में देखते हैं? या क्या वे उद्धारकर्ता है जिस के लिए आप रोज़ाना जीना चाहते हैं? 2. यीशु ने मनुष्य बन कर हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा। क्या हम वास्तव में इसकी महानता को समझते हैं।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या हम इस कहानी की ज्योतिषियों को पसंद करते हैं? क्या हम प्रभु यीशु की आराधना करके उसे उपहार देने के लिए खोजते हैं? या क्या हम उम्मीद करते हैं कि परमेश्वर हमें उपहार दे और हमारी मदद करें और हम उसके बदले में कुछ भी न दे। 2. जो बुद्धिमान हैं वे आज भी यीशु की आराधना उनसे कुछ प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि उनकी महानता के लिए करते है।

	B12 – लेवल 3 कहानी 4- क्रिसमस की ख़ुशी स्वर्गदूत का सन्देश।	B12 – लेवल 4 कहानी 4- क्रिसमस के चमत्कार उद्धार।
	बाइबल अनुभाग: लूका 2: 8-20 ***मुख्य पद : लूका 2: 11*** **हम सीख रहे की :** 1. स्वर्गदूत उद्धारकर्ता मसीह के आगमन के बारे में उत्साहित थे। 2. चरवाहा स्वर्गदूतों से खबर सुनने के बाद इस बच्चे यीशु से मिलने के लिए उत्साहित थे। 3. हमें भी यीशु का जन्म भी मनाने के लिए उत्साहित होना चाहिए।	***बाइबल अनुभाग: लूका 2: 25-40*** ***मुख्य पद : यशायाह 7: 14*** **हम सीख रहे की :** 1. यीशु के आगमन पर लोग लोग बहुत खुश थे। 2. यीशु के लिए मिश्रित प्रतिक्रियाएं होंगी। लोग या तो खुशी से यीशु को स्वीकार करने जा रहे थे या वे पूरी तरह से उसे अस्वीकार करेंगे। 3. प्रभु यीशु दुनिया में एक प्रकाश के लिए भेजा गया परमेश्वर का उद्धार है।
पहचान कराने	इस बारे में सोचें कि एक बच्चे का जन्म सामान्य रूप से उनके माता-पिता द्वारा या निमंत्रण पत्र द्वारा कैसे घोषित किया जाता है। वह पल बहुत ही खुशी से भरा होता है। समझाओ कि यीशु कैसे एक सामान्य बच्चा नहीं था, इसलिए उसका जन्म का घोषणा भी सामान्य तरीके से नहीं किया जाएगा।	नौ महीने तक इन्तज़ार करने के बाद जब कोई बच्चा पैदा होता है तो बहुत ख़ुशी होती है। समझाओ कि जिन लोगों के बारें में हम इस अध्याय में सीखने जा रहे हैं, उन्होंने इस बच्चे से मिलने के लिए अपने पूरे जीवन इंतजार किया था। और आखिर में उनसे मिलने से वे बेहत कुश हुए होंगे।
पूरा करने	**बाइबल कहानी को** पेश करें **चर्चा करें और समझाएं:** 1. जिस रात यीशु पैदा हुआ था चरवाहा अपनी भेड़ों का पहरा देते थे। बताएं कि आम तौर पर रात में भेड़ों का पहरा देना चरवाहों के लिए काफी शान्त और मन्द हुए होंगे। **(पद 8)** 2. लेकिन इस रात कुछ अद्भुत हुआ। एक स्वर्गदूत उन्हें दिखाई दिया और वे सभी डरे हुए थे। बच्चों से पूछें कि उनके साथ ऐसे कुछ होने से वे कैसा महसूस करेंगे। **(पद 9)** 3. स्वर्गदूत उन्हें यह बताने आया था कि उद्धारकर्ता-यीशु का जन्म हुआ था। **(पद 11)** 4. तब उस स्वर्गदूत के साथ और भी स्वर्गदूतों ने धरती पर प्रभु यीशु के आगमन का जश्न मनाते परमेश्वर की स्तति करते प्रकट हुए। यह बताएं कि चरवाहों के लिए यह दृष्टि कितनी शानदार हुए होंगे। **(पद 13, 14)** 5. जब स्वर्गदूत उनके पास से चले गए, चरवाहों ने से इस बच्चे को देखने के लिए जल्दी निकल पड़े। चर्चा करें की उस वक्त वे कैसे महसूस कर रहे थे; शायद उन्होंने सोचा कि यह सब उनकी कल्पना थी या फिर स्वर्गदूत ने गलत सन्देश दिया था। 6. उन्होंने बच्चे को उसी तरह पड़ा देखा जैसे स्वर्गदूत ने वर्णन किया था। (पद 16) उन्होंने परमेश्वर की प्रशंसा और महिमा की और हर किसी को पैदा हुए उद्धारकर्ता के बारे में बताने लगा। **(पद 16,17)** 7. इस बारे में सोचें की इस बच्चे को देखने के लिए चरवाहे कितने उत्साहित थे। उन्होंने तुरंत ही लोगों को उनके बारे में बताने लगे। और दूसरों के साथ सुसमाचार साझा करना चाहता था। **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. शमौन एक ऐसा व्यक्ति था जिसने परमेश्वर आज्ञा का पालन श्रद्धापूर्वक करके उन पर भरोसा किया। **(पद 25)** 2. पवित्र आत्मा ने शमौन से वादा किया है कि वह मरने से पहले प्रतीक्षित मसीहा को देखेगा। **(पद 26)** चर्चा करें कि कैसे उसकी बुढ़ापे में शमौन कैसे महसूस किया होगा यह सोचकर कि क्या यह सम्बव होगा की नहीं। 3. एक दिन, शमौन मंदिर में था जब मरियम और यूसुफ शिशु यीशु के साथ पहुंचे, उसने बहुत खुश होकर परमेश्वर की प्रशंसा की और बच्चे को आशीर्वाद दिया। 4. **लूका 2:34** में, शमौन ने कहा कि वह कई लोगों के लिए एक खुशी होगी लेकिन कई लोग उनका विरोध करेंगे। इस बात का पता लगाएं कि इसका क्या मतलब है। 5. हन्ना, एक भविष्यवक्ता, भी उस समय मंदिर में थी और वह हमेशा मंदिर में रहकर प्रार्थना और उपवास करती थी। **(पद 36,37)** 6. जब उसने बच्चे यीशु को देखा उसने परमेश्वर की प्रशंसा की और हर किसी को उसके बारे में बताना शुरू किया। **(पद 38)** 7. यीशु अपने माता-पिता के साथ घर गया और बुद्धि में बढ़ा और परमेश्वर उससे प्रसन्न थे। समझाओ कि कैसे यीशु अन्य बच्चों से अलग था। 8. गौर करें कि मरियम और यूसुफ ने अपने बच्चे के बारें में शमौन और हन्नाह ने दिए प्रतिक्रिया से कैसे महसूस किए होंगे। **मुख्य पद को समझाएं और बच्चों को इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। बाइबल टाइम अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	इस जन्म घोषणा की कल्पना करके इसकी एक तस्वीर बनाएं, मुख्य पद में जो स्वर्गदूत ने कहा उसे भी इस तस्वीर में शामिल करों।	अपने बच्चे को लेकर मरियम और यूसुफ बहुत खुश हुए होंगे। मुख्य पद सीखें और चर्चा करें कि कैसे यह पद आज के अध्ययन को सारांशित करती है।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या हम यीशु के बारे में दूसरों को बताने के लिए चरवाहों की तरह उत्साहित हैं? क्या आप वास्तव में सोचते हैं कि उनका जन्म उतना ही अद्भुत है जितना उन्होंने सोचा था? 2. क्या हम सही कारणों के लिए क्रिसमस मनाते हैं? क्या हमारे लिए क्रिसमस सिर्फ उपहार और पार्टियां के बारे में है या क्या हम अपने उद्धारकर्ता के रूप में यीशु की आगमन को मानते है?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. शमौन और हन्ना परमेश्वर के सच्चे भक्त थे। क्या हम अपने जीवन परमेश्वर को समर्पित करते हैं? क्या हम प्रार्थना करते हैं और हमारे बाइबल पढ़ते हैं? 2. मुख्य पद में, यह कहता है कि यीशु का नाम इम्मानुएल रखना है, जिसका अर्थ है 'परमेश्वर हमारे साथ' अगर हम इस सत्य पर विश्वास करते है तो हम अपने जीवन कैसे जीएंगें?

पाठ को अंकन करने शिक्षको केलिए मार्गदर्शन

लेवल 3 पाठ:

- हर हफ्ते एक/दो पन्ने को मुख्य रूप से रंग भरने या सवालों के जवाब देने।
- हर हफ्ते 10 अंक निर्धारित किए है और एक महीने में अधिकतम 40 अंक।
- लेवल 1 के बच्चों को अक्सर पढने में तकलिफ हो सकता है इसलिए हम चाहते है कि माता-पिता/ रक्षक/शिक्षक उनके सहायता करे।
- हम हर सवाल केलिए 2 अन्क निर्धारित किए है और शेष अन्क रंग भरने केलिए ऐक अध्याय केलिए 10 अन्क।

लेवल 4 पाठ:

- हर हफ्ते 4 पन्ने।
- कहानी पाठ में ही निहित है। बच्चों को पहेली सुलझाने, रंग भरने, मुख्य पद को पूरा करना है।
- 20 अन्क हर हफ्ते केलिए निर्धारित है और एक महीने केलिए अधिकतम 80 अन्क।

बाइबल टाइम के मार्किन्ग

निर्देश:

शिक्षक पहले:

- पाठ को जाँच कर चिन्हित करे।
- निर्देश अनुसार आवश्यक अन्क है।
- गलत जवाब के पास चिन्हित करे और सही जवाब भी लिखे।
- आन्शिक रूप से सही उत्तर केलिए एक अन्क दे।
- एक महीने के कुल अन्क के दिए हुए जगह में लिखो।

© Bible Educational Services 2020
www.besweb.com